1. दुःख का अधिकार

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

ज. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसका दर्जा और अधिकार का पता चलता है तथा उसकी | अमीरी-गरीबी की श्रेणी का भी पता चलता है।

2. खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था?

ज. खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे इसलिए नहीं खरीद रहा था क्योंकि वह घुटनों में सिर गड़ाए फफक-फफककर | रो रही थी। इसके बेटे की मृत्यु के कारण लगे सूतक के कारण लोग इससे खरबूजे नहीं ले रहे थे।

3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

ज. उस स्त्री को देखकर लेखक को उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी। उसे देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। वह नीचे झुककर उसकी अनुभूति को समझना चाहता था तब उसकी पोशाक इसमें अड़चन बन गई।

4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

ज.उस स्त्री का लड़का तेईस बरस का था। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर खेती करके परिवार का गुजारा करता था। एक दिन वह सुबह मुँह-अंधेरे खेत में बेलों से पके खरबूजे चुन रहा था कि गीली मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उस लड़के को डस लिया। ओझा के झाड़-फेंक आदि का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?

ज.उस बुढ़िया का बेटा मर चुका था। लोगों को पता था कि बुढ़िया को दिए उधार के लौटाने की कोई संभावना नहीं है। इसलिए अब बुढ़िया को कोई भी उधार देने को तैयार नहीं था।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?

ज. मनुष्य की पहचान उसकी पोशाक से होती है। यह पोशाक ही मनुष्य को समाज में अधिकार दिलाती है। उसका दर्जा निश्चित करता है। जीवन के बंद दरवाजे खोल देता है। यदि हम समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं तो ऐसी स्थिति में हमारी पोशाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बन जाती है। जिस प्रकार वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने में रोके रखती है।

2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड्चन बन जाती है?

ज. जब भी ऐसी परिस्थिति आती है कि किसी दु:खी व्यक्ति को देखकर व्यथा और दु:ख का भाव उत्पन्न होता है। हमें उसके दु:ख का कारण जानने के लिए उसके समीप बैठने में हमारी पोशाक बंधन और अड़चन बन जाती है। उत्तम पोशाक हमें नीचे झुकने नहीं देती। यह हमें अमीरी का बोध कराती है। मानव-मानव के बीच दूरियाँ बढ़ाने का काम पोशाक करती है। ये पोशाक ही नियमों का उल्लंघन करती है। यदि हम निचली श्रेणियों के दु:ख को कम करके उन्हें दिलासा देना चाहते हैं तो ये पोशाक उसके लिए अड़चन बन जाती है।

3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

ज. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि उसकी पोशाक रुकावट बन गई। जब उसने उस खरबूजे बेचनेवाली स्त्री को घुटनों पर सिर रखकर रोते देखा और बाजार में खड़े लोगों का उस स्त्री के संबंध में बातें करते देखा तो लेखक का मन दु:खी हो उठा। कारण जानना चाहते हुए भी वह ऐसा नहीं कर पाया। यद्यपि व्यक्ति का मन दूसरों के दु:ख में दु:खी होता है, परंतु पोशाक परिस्थितिवश उसे झुकने नहीं देती।

4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

ज. भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर खेती करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाज़ार में बेचने के लिए कभी-कभी वह चला जाया करता था। वह घर का एकमात्र सहारा था। उसके घर में खानेवाले अधिक और कमानेवाला एक ही था। उनके घर की आर्थिक स्थिति गड़बड़ा गई थी। घर के बेटे पर सभी की आशाएँ टिकी होती हैं। भगवाना ही था जिस पर घर के सभी सदस्यों की आशाएँ टिकी हुई थीं। परिवार का निर्वाह
करने के लिए वह छोटे-बड़े काम करके घर के सदस्यों का ध्यान रखता था।

5. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढिया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

ज. लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन, बुढिया खरबूजे बेचने इसलिए चली गई क्योंकि उसके पास जो कुछ था भगवाना की मृत्यु के बाद दान-दक्षिणा में खत्म हो चुका था। बच्चे भूख के मारे बिलबिला रहे थे। बहू बीमार थी। मजबूरी के कारण बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लिए लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन जाना पड़ा था। भूख अच्छे-अच्छे लोगों को भी हिलाकर रख देती है। मृत्यु का दु:ख हो, या खुशी का आभास हो लेकिन पेट की आग घर से बाहर निकलने के लिए विवश कर देती है।

6. बुढ़िया के दु:ख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

ज. अमीर और गरीब में जन्मजात अंतर होता है। अमीर को दु:ख मनाने का अधिकार है गरीब को नहीं। बुढ़िया के दु:ख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए आई क्योंकि वह महिला अपने जवान बेटे की मृत्यु के कारण अढ़ाई-मास तक पलंग से उठ न सकी। पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद मूर्छित हो जाती थी। शहर भर के लोगों के हृदय उसके पुत्र शोक को देखकर द्रवित हो उठे थे। दूसरी ओर लोग बुढ़िया पर ताने कस रहे थे। वे उसकी मजबूरी से कोसों दूर थे। उसके दु:ख को वे समझ नहीं पा रहे थे। क्योंकि वह उस संभ्रांत महिला की भाँति बीमार न पड़कर अपना दु:ख भुलाकर बाज़ार में खरबूजे बेचकर अपने परिवार के लिए भोजन का प्रबंध करने आई थी जो कि लोगों के मन में खटक रहा था। दु:ख का अधिकार अमीर-गरीब में भेदभाव उत्पन्न करता है। थोड़ा-सा दु:ख जहाँ अमीरी को हिला देता है वहाँ बड़े-से-बड़ा दु:ख भी गरीब को सहज बने रहने पर मजबूर कर देता है। बुढ़िया के दु:ख और संभ्रांत महिला के दु:ख में यही अंतर था।

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. बाज़ार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

ज. बाज़ार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। एक आदमी घृणा से थूकते हुए कह रहा था कि बेटे की मृत्यु को अभी पूरे दिन नहीं हुए और यह दुकान लगाकर बैठी है। पेट की रोटी ही इनके लिए सब कुछ है। जैसी नीयत होती है; वैसी ही बरकत भगवान देता है। जवान लड़के की मौत हुई है, बेहया दुकान लगाकर बैठी है। सभी अपने व्यंग्य वाणों से उस स्त्री पर ताने कसे जा रहे थे। वह बेबसी से सिर झुकाए बैठी थी।

2. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

ज. पास-पड़ोसवालों से लेखक को पता चला कि बुढ़िया का 23 बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के बाहर डेढ़ बीघा जमीन में खेती कर अपने परिवार को निर्वाह करता था। कभी-कभी वह खरबूजे भी बेचता था। मुँह अंधेरे बेलों में से पके खरबूजे चुनते हुए गीली मेड़े की तरावट पर आराम कर रहे साँप पर उसका पैर पड़ गया। साँप के डसने से उसकी मृत्यु हो गई।

3. लड़के को बचाने के लिए बुढिया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

ज. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने ओझा को बुलाकर झाड़-फेंक करवाया। नाग देव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा दी गई। घर में जो कुछ आटा या अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे, भगवाना से लिपट-लिपटकर रोए, पर सर्प के विष से उसका सारा बदन काला पड़ गया था और लडका मर गया।

4. लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा कैसे लगाया?

ज. लेखक को जब आस-पड़ोसवालों ने वास्तविकता बताई तो वे बुढ़िया की विवशता को समझ गए। घर में जब कमाने वाला कोई न रहे तो मौत की परवाह न करके घर से बाहर निकलना ही पड़ता है। परंतु दूसरे लोग किसी भी परिस्थिति में चैन नहीं लेने देते। वैसे भी उन्हें गरीबों के दुःख का अंदाजा नहीं होता। लेखक इसी सोच में डूबे हुए बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगा रहे थे कि अमीर लोग अपने दुःख को बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करते हैं। वह बेहोश होने का नाटक करते हैं। और कई दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहते हैं। परंतु लेखक जानता था कि बुढ़िया अपने मन में दुःख को दबाए हुए अपनी बेबसी के अनुसार अपना दुःख दर्शा रही है।

5. इस पाठ का शीर्षक ‘दु:ख का अधिकार’ कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

ज. ‘दुःख का अधिकार’ शीर्षक अत्यंत सटीक है। संपूर्ण कथावस्तु दो वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है पहला शोषित वर्ग है जिसके शोषण का समाज को ‘अहसास नहीं है और दूसरा शोषक वर्ग, जिसका दुःख लोगों के हृदय तक पहुँचता है और आँखों से आँसू बहने लगते हैं। गरीब के दु:ख से लोग सर्वथा वंचित रहते हैं। उसके जीवन की कठिनाइयों को समझना नहीं चाहते। शोक या गर्म के लिए उसे सहूलियत नहीं देना चाहते। दु:खी होने को भी एक अधिकार मानते हैं। दु:ख मनाने का अधिकार भी केवल संपन्न वर्ग को है। दु:ख तो सभी को होता है, पर संपन्न वर्ग इस दु:ख का दिखावा करता है, गरीब को कमाने-खाने की चिंता दम नहीं लेने देती। अतः दु:ख को अधिकार शीर्षक पूर्णतया उपयुक्त है।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

ज. आशय-प्रस्तुत कहानी देश में फैले अंधविश्वासों और ऊँच-नीच के भेदभाव का पर्दाफाश करती है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि दु:ख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। कहानी धनी लोगों की अमानवीयता और गरीबों की विवशता को उजागर करती है। लेखक पोशाक के विषय में वर्णन करते हुए कहता है कि जिस प्रकार पतंग को डोर के अनुसार नियंत्रित किया जाता है तथा जब डोर पतंग से अलग हो जाती है, तब,पतंग हवा के साथ बहती हुई उड़ती है। और हवा के कारण अचानक ही धरती पर नहीं आ गिरती। किसी न किसी वस्तु में अटककर रह जाती है। वैसी ही स्थिति हमारी पोशाक के कारण उत्पन्न होती है। खास पोशाक के कारण व्यक्ति आसमानी बातें करने लगता है। उसकी पोशाक उसे अपनी अमीरी का आभास कराती है। वह गरीबों को अपने बराबर स्थान नहीं देना चाहता। उसकी स्थिति त्रिशंकु जैसी हो जाती है। वह चाहते हुए भी किसी के दुःख-दर्द में शामिल नहीं हो सकता। इसी तरह लेखक भी नीचे झुककर उस गरीब स्त्री का दुःख बाँटना चाहता था, किंतु उसकी पोशाक उसमें बाधा उत्पन्न करती है।

2. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सबे रोटी का टुकड़ा है।

ज. आशय-आशय यह है कि समाज में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति को नियमों, कानूनों व परंपराओं का पालन करना पड़ता है तभी वह सामाजिक प्राणी कहलाता है क्योंकि समाज में अपनी दैनिक आवश्यकताओं से अधिक महत्व जीवन मूल्यों को दिया जाता है। इस कहानी में बुढिया को घर की मज़बूरी फुटपाथ पर खरबूजे बेचने के लिए विवशकर देती है। वह दिल पर पत्थर रखकर लोगों के ताने सहन करती है। लोग ताना देते हुए कहते हैं कि इनके लिए बेटा-बेटी, पति-पत्नी और धर्म-ईमान सभी कुछ रोटी ही होती है। लोग किसी की विवशता पर हँस तो सकते है, परंतु उसका सहारा नहीं बन सकते। पेट की आग उन्हें दर-दर भटकने के लिए मजबूर कर देती है। दूसरों से सहानुभूति के स्थान पर ताने सुनने पड़े तो मन फूट-फूटकर रोने को चाहता है। ऐसा ही कहानी में उस बुढ़िया के साथ हुआ था।

3. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दु:खी होने का भी एक अधिकार होता है।

ज. आशय-इस पंक्ति का आशय यह है कि आज के इस समाज में दु:ख मनाने का अधिकार भी केवल धनी वर्ग को होता है। यह सत्य है कि दुःख सभी को तोड़कर रख देता है। दु:ख में मातम सभी मनाना चाहते हैं चाहे वह अमीर हो या गरीब। दुःख का सामना होने पर सभी विवश हो जाते हैं। गरीब व्यक्ति के पास न तो दु:ख मनाने की सुविधा है न समय है वह तो रोजी-रोटी के चक्कर में ही उलझा रहता है। संपन्न वर्ग शोक का दिखावा अवश्य करता है। परंतु वे अभागे लोग जिन्हें न दुःख मनाने का अधिकार है और न अवकाश। जो परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देते हैं, उन्हें पेट की ज्वाला को शांत करने के लिए दु:खी होते हुए भी काम करना पड़ता है। इस प्रकार निचली श्रेणी के लोगों को रोटी की चिंता दु:ख मनाने के अधिकार से वंचित कर देती है।

भाषा-अध्ययन

1.निम्नांकित शब्द-समूहों को पढ़ो और समझो-

(क) कङ्घा , पतङ्ग, चञ्चल, ठण्डा, सम्बन्ध।

(ख) कंघा, पतंग, चंचल, ठंडा, संबंध।

(ग) अक्षुण्ण, सम्मिलित, दुअन्नी, चवन्नी, अन्न।

(घ) संशय, संसद, संरचना, संवाद, संहार।

(ङ) अंधेरा, बाँट, मुँह, ईंट, महिलाएँ, में, मैं।

Note:

ध्यान दो कि ङ, ञ, ए, न और म् ये पाँचों पंचमाक्षर कहलाते हैं। इनके लिखने की विधियाँ तुमने ऊपर देखीं-इसी रूप में या अनुस्वार के रूप में। इन्हें दोनों में से किसी भी तरीके से लिखा जा सकता है और दोनों ही शुद्ध हैं। हाँ, एक पंचमाक्षर जब दो बार आए तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा; जैसे-अम्मा, अन्न आदि। इसी प्रकार इनके बाद यदि अंतस्थ य, र, ल, व और ऊष्म श, ष, स, ह आदि हों तो अनुस्वार का प्रयोग होगा, परंतु उसका उच्चारण पंचम वर्गों में से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है; जैसे-संशय, संरचना में 'न्', संवाद में 'म्' और संहार में 'ङ'।। (') यह चिह्न है अनुस्वार का और (*) यह चिह्न है अनुनासिक का। इन्हें क्रमशः बिंदु और चंद्र-बिंदु भी कहते हैं। दोनों के प्रयोग और उच्चारण में अंतर है। अनुस्वार का प्रयोग व्यंजन के साथ होता है अनुनासिक का स्वर के साथ।

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए-

ईमान	–	धर्म, विश्वास।	दर्ज़ा	–	श्रेणी, पदवी।
बदन	–	शरीर, काया।	ज़मीन	–	पृथ्वी, धरा।
अंदाज़ा	–	अनुमान, आंकलन।	ज़माना	–	युग, काल।
बेचैनी	–	व्याकुलता, अकुलाहट।	बरकत	–	लाभ, इज़ाफा।
गम	–	दुःख, पीड़ा।			

3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द-युग्मों को छाँटकर लिखिए-

उदाहरण-बेटा-बेटी ।

ज.पाठ में दिए गए शब्द-युग्मः बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, पोता-पोती, झाड़ना-फेंकना, छन्नी-ककना, दुअन्नी-चवन्नी। अन्य शब्द-युग्म इस प्रकार हैं- आते-जाते, धर्म-ईमान, दान-दक्षिणा।

4. पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांशों की व्याख्या कीजिए

1.बंद दरवाजे खोल देना-इसका अर्थ है कि जहाँ पहले सुनवाई नहीं होती थी, वहाँ अब बात सुनी जाती है। जहाँ पहले अपमान होता था, वहाँ अब मान-सम्मान होता है।

यदि आदमी की पोशाक अच्छी होती है तो लोग उसका आदर-सत्कार करते हैं। उसे कहीं भी आने-जाने से रोका नहीं जाता/उसके लिए सभी रास्ते खुले होते हैं।

2.निर्वाह करना-पेट भरना/घर का खर्च चलाना/कमाकर परिवार का पालन-पोषण करना। भगवाना सब्ज़ी-तरकारी बोकर परिवार का निर्वाह करता था।

3.भूख से बिलबिलाना-भूख के कारण तड़पना, भूख से रोना। खाने-पीने की सामग्री न होने के कारण बुढ़िया के पोते-पोतियाँ भूख से व्याकुल हो रहे थे। घर का आर्थिक स्थिति डगमगाने लगती है तो बच्चे भूख से बिलबिलाने लगते हैं।

4.कोई चारा न होना-कोई उपाय न होना।

भगवाना की माँ के पास अपने पोता-पोती को पेट भरने के लिए तथा बहू की दवा-दारू करने के लिए पैसे नहीं थे। कोई उधार भी नहीं देता था। घर में जब कमाई का कोई उपाय नहीं रहता तो दुःख भरे क्षणों में भी कमाई के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता है। बुढिया के पास इसके अतिरिक्त कोई साधन नहीं था कि वह बाज़ार में खरबूजे बेचने जाती।

5.शोक से द्रवित हो जाना-दुःख से हृदय पिघल जाना। लेखक खरबूजे बेचनेवाली बुढ़िया के रोने से दुःखी था। किसी के दुःख को देखकर स्वयं भी दुःखी होने का भाव प्रकट होता है। प्रतिष्ठित लोगों के दुःख को देखकर लोगों के हृदय पिघलने लगते हैं। उन लोगों के दुःख को प्रकट करने का तरीका अत्यंत मार्मिक होता है।

5.निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द-समूहों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क)

1. **छन्नी-ककना-**बुढिया माँ ने अपने पुत्र को बचाने के लिए छन्नी-ककना तक बेच दिए।
2. **अढ़ाई-मास-**आज से ठीक अढाई मास बाद हमारी वार्षिक परिक्षाएँ शुरू हो जाएँगी।
3. **पास-पड़ोस-**मेरे पास-पड़ोस में सभी लोग मिल-जुलकर रहते हैं।
4. **दुअन्नी-चवन्नी-**महिला को गरीब जानकर किसी ने उसे दुअन्नी-चवन्नी भी उधार न दी।
5. **मुँह-अँधेरे-**मेरे दादा जी को मुँह-अँधेरे उठकर सैर करने की आदत है।
6. **झाड़ना-फेंकना-**मोहन डॉक्टर के इलाज करने की बजाए ओझा से झाड़ना-फेंकना करवाने में अधिक विश्वास रखता है।

(ख)

1. **फफक-फफककर-**अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही बुढ़िया फफक-फफकर रोने लगी।
2. **बिलख-बिलखकर-**अध्यापिका की डाँट पड़ते ही छात्रा बिलख-बिलखकर रोने लगी।
3. **तड़प-तड़पकर-**साँप से काटे जाने पर भगवाना ने तड़प-तड़पकर प्राण दे दिए।
4. **लिपट-लिपटकर-**घायल होने के कारण पुत्र पिता से लिपट-लिपटकर रोने लगा।

6.निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं को ध्यान से पढ़िए और इस प्रकार के कुछ और वाक्य बनाइए-

(क)

1. लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। -

2. उसके लिए तो बजाज की दुकान से कपड़ा लाना ही होगा।

3. चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

ज

1. रमेश बिस्तर से उठते ही पेट दर्द से बिलबिलाने लगा।
2. बच्चे को चुप कराने के लिए बाजार से खिलौना लाना ही होगा।
3. गरीबी के कारण मोहन को छोटी उम्र में नौकरी ही क्यों न करना पड़े।

(ख)

1. अरे जैसी नीयत होती है, अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।

2. भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला।

ज

1. अरे जो जैसे बोता है, वैसा ही काटता है।
2. कविता जो एक बार यहाँ आई तो फिर नहीं गई।

योग्यता विस्तार

1. व्यक्ति की पहचान उसकी पोशाक से होती है। इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।

2. यदि आपने भगवाना की माँ जैसी किसी दुखिया को देखा है तो उसकी कहानी लिखिए।

3. पता कीजिए कि कौन-से साँप विषैले होते हैं? उनके चित्र एकत्र कीजिए और भित्ति पत्रिका में लगाइए।

ज : विद्यार्थी स्वयं करें।

2. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

मौखिक

1. अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?

ज. अग्रिम दल का नेतृत्व उपनेता प्रेमचंद कर रहे थे।

2. लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा?

ज.सागरमाथा शब्द से तात्पर्य है 'सागर के माथे के समान' तथा एवरेस्ट को सागरमाथा के नाम से जाना जाता है। यह एक स्थानीय नाम था इसलिए लेखिका को यह नाम पसंद आया। एवरेस्ट को नेपाली भाषा में सागरमाथा नाम से जाना जाता है।

3. लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?

ज.एवरेस्ट की तरफ गौर से देखते हुए लेखिका को एक भारी बर्फ का फूल दिखा जो पर्वत शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था।

4. हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुए?

ज.हिमस्खलन से एक की मृत्यु हुई और चार घायल हो गए।

5. मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

ज.एक शेरपा कुली की मृत्यु तथा चार के घायल होने के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरे पर छाए अवसाद को देखकरकर्नल खुल्लर ने कहा कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु को भी सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

6. रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

ज.एवरेस्ट शिखर पर चढ़ाई के दौरान जलवायु अनुकूल नहीं थी। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलावों के कारण रसोई सहायक मृत्यु हो गई।

7. कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

ज.कैंप चार साउथ कोल में 29 अप्रैल को सात हजार नौ सौ मीटर की ऊँचाई पर लगाया गया था।

8. लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?

ज.लेखिका ने जब साउथ कोल के बेस कैंप में शेरपा कुली को देखा तो उन्होंने उसे अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिलकुल ही नौसिखिया हूँ और यह मेरा पहला अभियान है।

9. लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?

ज.लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने बधाई देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।"

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?

ज. नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को इतना अच्छा लगा कि वह भौचक्की होकर देखती रही। उसने बेस-कैंप पहुँचने पर दूसरे दिन एवरेस्ट और उसकी अन्य श्रेणियों को देखा। वह इसके सौंदर्य को देखकर प्रभावित हुई। ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी बर्फीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

2. डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?

ज. डॉ. मीनू मेहता ने उन्हें निम्न जानकारियाँ दीं

- अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना।
- लट्ठों और रस्सियों को उपयोग करना।
- बर्फ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना।
- अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। किसी भी अनजान पथ पर जाते हुए यह जानकारी महत्वपूर्ण थी। पर्वतीय यात्रा से पूर्व तैयारी करनी पड़ती है। यदि विस्तृत जानकारी न हो तो। रोमांचक यात्रा खतरनाक मोड़ ले लेती है।

3. तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में क्या कहा?

ज. तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में कहा कि वह एक पक्की पर्वतीय लड़की है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। कठिन रोमांचक कार्य करना उनका शौक था। ऐसा लगता था कि जैसे पर्वतीय स्थानों की जानकारी उन्हें पहले से ही हो। यद्यपि एवरेस्ट का उनका पहला अभियान था। तेनजिंग का उनके कंधे पर हाथ रखकर प्रोत्साहन
देना उन्हें अच्छा लगा।

4. लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?

ज. लेखिका को लोपसांग, तशारिंग, एन.डी. शेरपा और आठ अन्य शरीर से मजबूत और ऊँचाइयों में रहनेवाले शेरपाओं के साथ चढ़ाई करनी थी। जय और मीनू उससे बहुत पीछे रह गए थे जबकि वह साउथ कोल कैंप पहुँच गई थी। बाद में वे भी आ गए थे। अगले दिन सुबह 6.20 पर वह अंगदोरजी के साथ चढ़ाई के लिए निकल पड़ी जबकि अन्य कोई भी व्यक्ति उस समय उसके साथ चलने के लिए तैयार नहीं था। अन्य पर्वतारोहियों के साथ चढ़ते हुए खतरों से जूझना उनकी आदत हो गई थी।

5. लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया?

ज. जब लेखिको गहरी नींद में सो रही थी तभी सिर के पिछले हिस्से से कोई चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से बर्फ का पिंड गिरा था जिसने कैंप को तहस-नहस कर दिया था। लोपसांग ने अपनी स्विस छुरी से तंबू का रास्ता साफ किया और लेखिका के पास से बड़े-बड़े हिमखंडों को हटाया और चारों तरफ फैली हुई कठोर बर्फ की खुदाई की। तब जाकर बाहर निकलने का रास्ता साफ हो सका। यदि थोड़ी-सी भी देर हो जाती तो उसका सीधा अर्थ था-मृत्यु।

6. साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?

ज. साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी के लिए खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिण्डर इकट्ठे किए। इसके बाद लेखिका अपने दल के दूसरे साथियों की सहायता के लिए एक थरमस में जूस और दूसरे में चाय भरने के लिए नीचे उतर गई।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए

1. उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?

ज. उपनेता प्रेमचंद ने अग्रिम दल का नेतृत्व करते हुए पहली बड़ी बाधा खंभु हिमपात की स्थिति से पर्वतारोहियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप-एक जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ कर दिया है। उन्होंने यह बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा इंडियों से रास्ता चिनित कर सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी बदलाव व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

2. हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

ज. बर्फ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही हिमपात बनाता है। हिमपात अनियमित और अनिश्चित होता है। इससे अनेक प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं। ग्लेशियर के ढहने से अकसर बर्फ में हलचल हो जाती है। इससे बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानें तुरंत गिर जाती हैं और खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। धरातल पर दरारें पड़ जाती हैं। ये दरारें अकसर गहरी-गहरी चौड़ी दरारों का रूप धारण कर लेती हैं। इस प्रकार पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं।

3. लेखिका के तंबू में गिरे बर्फ पिंड का वर्णन किस तरह किया गया है?

ज. लेखिका गहरी नींद में सोई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग सिर के पिछले हिस्से से किसी सख्त चीज के टकराने से नींद खुल गई। साथ ही एक जोरदार धमाका भी हुआ। साँसें लेने में कठिनाई होने लगी। एक लंबा बर्फ का पिंड कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था। उसका विशाल हिमपुंज बन गया था। हिमखंडों, बर्फ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज गति और भीषण गर्जना को भी पीछे छोड़ दिया। कैप नष्ट हो गया था। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी। यह एक आश्चर्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी।

4. लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

ज. जय लेखिका का पर्वतारोही साथी था। उसको भी लेखिका के साथ पर्वत शिखर पर जाना था। शिखर कैंप पर पहुँचने में उसे देरी हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। इसलिए बचेंद्री उसके लिए चाय-जूस आदि लेकर उसे रास्ते में लिवाने पहुँची। बर्फीली हवाएँ चल रहीं थीं और नीचे जाना खतरनाक था। लेखिका को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय वगैरह पी और लेखिका को आगे जाने से रोका। लेखिका को 'की' से मिलना था। थोड़ा सा आगे नीचे उतरने पर लेखिका ने 'की' को देखा। वह लेखिका को देखकर हक्का-बक्का रह गया।

5. एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए।

ज. एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल सात कैंप लगाए गए थे

- बेसकैंप : यह कैंप काठमांडू के शेरपालैंड में लगाया गया। पर्वतीय दल के नेता कर्नल खुल्लर यहीं रहकर एक-एक गतिविधि का संचालन कर रहे थे। उपनेता प्रेमचंद ने भी हिमपात संबंधी सभी कठिनाइयों का परिचय यहीं दिया।
- कैंप एक : यह हिमपात से 6000 मीटर की ऊँचाई पर था। यहाँ हिमपात से सामान उठाकर कैंप तक लाए जाने | का अभ्यास किया गया।
- कैंप दोः 16 मई प्रातः सभी लोग इस कैंप पर पहुँचे। जिस शेरपा की टाँग टूट गई उसे स्ट्रेचर पर लिटाया गया।
- कैंप तीनः यह ल्होत्से पहाड़ियों के आंगन में स्थित था। यहाँ नाइलॉन के बने तंबू में लेखिका और उसके सभी साथी सोए हुए थे। इसमें 10 व्यक्ति थे रात 12.50 बजे एक हिमखंड उन पर आ गिरा।
- कैंप चारः यह समुद्र के 7900 मीटर ऊपर था। यहीं से साउथ कैंप और शिखर कैंप के लिए चढ़ाई की गई। यह 29 अप्रैल 1984 को अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा ने लगाया था।
- साउथ कोल कैंपः यहीं से अंतिम दिन की चढ़ाई शुरू हुई।
- शिखर कैंप: यह पर्वत की सर्वोत्तम चोटी से ठीक नीचे स्थित है। इस कैंप में लेखिका और अंगदोरजी केवल दो घंटे में पहुंच गए।

6. चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

ज. चढ़ाई के समय ऐवरेस्ट पर जमी बर्फ सीधी और ढलाऊ थी। चट्टानें इतनी भुरभुरी थीं मानो शीशे की चादरें बिछी हों। बर्फ़ काटने के लिए फावड़े का प्रयोग करना पड़ा। दक्षिण शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज हवा के झोंके झुरझुरी बर्फ के कणों को चारों ओर उड़ा रहे थे। बर्फ़ इतनी अधिक थी कि सामने कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पर्वत की शंकु चोटी इतनी तंग थी कि दो आदमी वहाँ खड़े नहीं हो सकते थे। ढलान सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक थी। वहाँ अपने-आप को स्थिर खड़ा करना बहुत कठिन है इसलिए उन्होंने फावड़े से बर्फ़ को तोड़कर अपने टिकने योग्य स्थान बनाया।

7. सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है?

ज. लेखिका के व्यवहार से सहयोग और सहायता का परिचय तब मिलता है जब उसने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने का निश्चय किया। इसके लिए उसने एक थरमस को जूस से तथा दूसरे को गरम चाय से भरकर बर्फीली हवा में तंबू से बाहर निकली और नीचे उतरने लगी। जय ने उसके इस प्रयास को खतरनाक बताया तो बचेंद्री ने जवाब दिया “मैं भी औरों की तरह पर्वतारोही हूँ, इसलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से ठीक हूँ। इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए?” यह भावना उसकी सहयोगी प्रवृत्ति को दर्शाती है।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए

1. एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

2. सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र ख्याल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

3. बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया।

उत्तर

1. आशय-ये शब्द कर्नल खुल्लर ने अभियान दल के सदस्यों को कहे थे। जिनका आशय था कि एवरेस्ट पर पहुँचना एक महान अभियान है जिसमें खतरे तो रहते ही हैं। कभी-कभी किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है। इसमें कदम-कदम पर जान जाने का खतरा होता है। यदि ऐसा कठिन कार्य करते हुए मृत्यु भी हो जाए तो उसे स्वाभाविक घटना के रूप में लेना चाहिए। बहुत हाय-तौबा नहीं मचानी चाहिए क्योंकि ऐसे महान अभियानों में यह भी संभव है।

2. आशय-हिमपात का अव्यवस्थित ढंग से गिरना स्वयं में डरावना था। धरातल में दरार पड़ने का विचार और हिमपात तथा ग्लेशियर के बहने से बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानों के गिरने की बात सुनकर लेखिका का भयभीत होना स्वाभाविक था। बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानों के गिरने से कई बार धरातल पर ये दरारें बहुत गहरी और चौड़ी बर्फ से ढकी हुई गुफाओं में बदल जाती थीं, जिनमें धंसकर मनुष्य का जीवित रहना संभव नहीं था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि इनके सारे अभियान में यह हिमपात लगभग एक दर्जन पर्वतारोहियों और कुलियों का प्रतिदिन प्रभावित करता रहेगा। उन्हें इसका सामना करना पड़ेगा।

3. आशय-लेखिका एवरेस्ट शंकुनुमा चोटी पर पहुँचनेवाली प्रथम महिला थी। वह अपने साहस और हिम्मत से अपनी निर्धारित मंजिल तक पहुँच गई थी। वहाँ दो व्यक्तियों का इकट्ठे खड़े होना असंभव था। बर्फ़ के फावड़े से खुदाई करके उन्होंने अपने आपको सुरक्षित कर लिया और घुटनों के बल बैठकर सागरमाथा के ताज को चूम लिया। पूजा-अर्चना करते हुए लेखिका ने लाल कपड़े में दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा लपेटी। बर्फ में उसे दबाया व माता-पिता का स्मरण करने लगी। यह लेखिका के लिए अत्यंत गौरव का क्षण था। उन्हें आज भी एवरेस्ट पर चढ़नेवाली प्रथम भारतीय महिला के रूप में पहचाना जाता है।

भाषा-अध्ययन

इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या पाठ का संदर्भ देकर कीजिए-

1. निहारा है-प्रसन्नतापूर्वक देखा है।

लेखिका ने नमचे बाज़ार में पहुँचकर सबसे पहले एवरेस्ट को देखा था वह उसे देखते ही उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गई। इसलिए लेखिका इसे मात्र देखा न कहकर निहारा' कहती है।

2. धसकना-नीचे को फँसना।

जब धरती का कुछ हिस्सा नीचे की ओर दब जाता है उसे धसकना कहते हैं।

3. खिसकना-अपनी जगह से हटकर परे चले जाना।

हिमपात से बर्फ की बड़ी-बड़ी चट्टानें खिसक जाती हैं।

4. सागरमाथा-संसार का सबसे ऊँचा स्थान।

जिस स्थान ने बचेंद्री पाल ने हिमालय की चढ़ाई आरंभ की, वह स्थान समुद्र तल का सर्वोच्च स्थान है इसलिए उसे सागरमाथा ठीक ही कहा गया है।

5. जायजा करना – विवरण देना

उपनेता प्रेमचंद एवरेस्ट शिखर यात्रा करते समय आनेवाली सभी कठिनाइयों का खुलासा विस्तार रूप से किया इसलिए लेखिका ने इस विस्तार विवरण को जायजा करना कहा |

5. नौसिखिया-अनजान।

तेनजिंग के सामने बचेंद्री पाल ने स्वयं को नौसिखिया पर्वतारोही कहा।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए-

(क) उन्होंने कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।

ज. उन्होंने कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"

(ख) क्या तुम भयभीत थीं।

ज. "क्या तुम भयभीत हो"?

(ग) तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री।

ज. "तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली? बचेंद्री"।

3. नीचे दिए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

उदाहरण-हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था।

टेढ़ी-मेढ़ी-पहाड़ों पर सड़कें टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं।

गहरे-चौड़े-बर्फ के बड़े ग्लेशियर गिरने से गहरे-चौड़े गड्ढे पड़ गए थे।

आस-पास-हमारे विद्यालय के आस-पास बहुत हरियाली है।।

हक्का-बक्का-अपने माता-पिता को पार्टी में आया देखकर रमेश हक्का-बक्का रह गया।

इधर-उधर-चोरी पकड़े जाने पर रमेश सहायता के लिए इधर-उधर देखने लगा।

लंबे-चौड़े-नेता लोग वादे तो लंबे-चौड़े करते हैं परंतु उनमें से एक भी पूरा नहीं करते।

4. उदाहरण के अनुसार विलोम शब्द बनाइए-

नियमित – अनियमित	आरोही – अवरोही	सुंदर – असुंदर
विख्यात – कुख्यात	निश्चित – अनिश्चित	

5. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग लगाइए-

जैसे- पुत्र-सुपुत्र।

वास – प्रवास	व्यवस्थित – सुव्यवस्थित	कूल – प्रतिकूल, अनुकूल
गति – प्रगति	रोहण – आरोहण	रक्षित – आरक्षित

6. निम्नलिखित क्रियाविशेषणों का उचित प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अगले दिन, कम समय में, कुछ देर बाद, सुबह तक

(क) मैं सुबह तक यह कार्य कर लूंगा।।

(ख) बादल घिरने के कुछ देर बाद ही वर्षा हो गई।

(ग) उसने बहुत कम समय में इतनी तरक्की कर ली।

(घ) नाङ्केसा को अगले दिन गाँव जाना था।

योग्यता-विस्तार

1.इस पाठ में आए दस अंग्रेज़ी शब्दों का चयन कर उनका अर्थ लिखिए।-

ज

1. बेस कैंप	2. एवरेस्ट	3. किलोमीटर	4. ग्लेशियर	5. वॉकी-टॉकी
6. साउथ	7. कुकिंग गैस	8. स्ट्रेचर	9. थरमस	10. नाइलॉन

2. पर्वतारोहण से संबंधित दस चीजों के नाम लिखिए।-

ज

1. लट्ठे	2. थरमस	3. तंबू	4. धुरी	5. वॉकी-टॉकी
6. ऑक्सीजन	7. फावड़ा	8. अल्यूमिनियम की सीढ़ी	9. झंडियाँ	10. नाइलॉन की रस्सी

3. तेनजिंग शेरपा की पहली चढ़ाई के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

4. इस पर्वत का नाम 'एवरेस्ट' क्यों पड़ा? जानकारी प्राप्त कीजिए।

ज : विद्यार्थी स्वयं करें।

3. तुम कब जाओगे, अतिथि

मौखिक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

ज.अतिथि लेखक के घर पर पिछले चार दिनों से रह रहा था और अभी तक जाने का नाम नहीं ले रहा था।

2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं?

ज.कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से पंछी के पंखों की तरह फड़फड़ा रही हैं।

3. पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

ज.पति ने स्नेह से भीगी मुस्कराहट से मेहमान को गले लगाकर उसका स्वागत किया। रात के भोजन में दो प्रकार की सब्ज़ियों और रायते के अलावा मीठी चीजों का भी प्रबंध किया गया था। उनके आने पर पत्नी ने उनका स्वागत सादर प्रणाम करके किया था।

4. दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

ज.दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई अर्थात दोपहर के भोजन को लंच जैसा शानदार बनाया गया।

5. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

ज.तीसरे दिन सुबह अतिथि ने लॉण्ड्री में कपड़े देने को कहा क्योंकि वह उससे कपड़े धुलवाना चाहता था।

6. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

ज.सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर डिनर के स्थान पर खिचड़ी बनने लगी। खाने में सादगी आ गई और अब भी | वह नहीं जाता तो उपवास तक रखना पड़ सकता था।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

ज. लेखक अतिथि को भावपूर्ण विदाई देना चाहता था। वह अतिथि का भरपूर स्वागत कर चुका था। उसके सत्कार का आखिरी छोर आ चुका था। प्राचीनकाल में कहा जाता था-'अतिथि देवो भव'। अतिथि जब विवशता का पर्याय बन जाए तो उसे भाव-विभोर होकर विदा नहीं किया जा सकता। लेखक चाहता था कि जब अतिथि विदा हो तब वह और उसकी पत्नी उसे स्टेशन तक छोड़ने जाएँ। वह उसे सम्मानजनक विदाई देना चाहता था परंतु उसकी यह मनोकामना पूर्ण नहीं हो पाई।

2. पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए

(क)अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।

ज. लेखक के घर में जब मेहमान आया तो उसे लगा कि उसका बटुआ हल्का हो जाएगा। उसके हृदय में बेचैनी होने लगी कि इस अतिथि का सत्कार कैसे किया जाएगा। ऐसे मेहमान जो बिना सूचना के आते हैं। उन्हें देखकर अचानक मेजबान का हाथ अपने बटुए पर चला जाता है। मन काँपने लगता है। खर्चे बढ़ने की आशंका बढ़ जाती है।

(ख)अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

ज. अतिथि जब बहुत दिनों तक किसी के घर ठहर जाता है तो 'अतिथि देवो भव' का मूल्य नगण्य हो जाता है। उन्हें देवता नहीं माना जाता। अतिथि जबरदस्ती दूसरों के घर में ठहरकर राक्षसत्व का स्वरूप पा लेता है। यदि अतिथि लंबे समय तक ठहर जाता है तो वह अपना महत्त्व खो बैठता है। अधिक दिनों तक अतिथि का ठहरना व्याकुलता उत्पन्न कर देता है। उसकी विदाई की प्रतीक्षा में मन डूबने लगता है। अतिथि के मुख पर सुलभ व सहज मुस्कान होती है और वह मुस्कान लेखक की सहनशीलता को ठेस पहुँचाती है।

(ग)लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े।

ज. लोग अपने घर को तो स्वीट होम ही रखना चाहते हैं परंतु दूसरे के घर की मिठास में जहर घोलते नजर आते हैं। अतिथि जब दूसरों के घर जाते हैं तो उनके घर की शांति नष्ट कर देते हैं, लोगों का आचरण दूसरों के जीवन को उथल-पुथल कर देता है। अतिथियों की मेहमाननवाज़ी करने में बोरियत होती है। आर्थिक स्थिरता को बनाकर घर में लोग सुख-चैन की साँस ले रहे होते हैं। खान-पान, रहन-सहन सब ठाट-बाट का होता है। अचानक अतिथि का आगमन देवत्व का बोध नहीं करा पाता। घर की स्वीटनेस को काट डालता है। ऐसे लोगों को भाव भीनी विदाई देने का मन करता है जो दूसरों के घरों की सरसता कम करने का कारण बन जाते हैं।

(घ) मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

ज. अतिथि यदि एक-दो दिन के लिए ठहरे तो उसका आदर-सत्कार होता है परंतु जब अधिक दिन ठहरे तो मेजबान की सहनशीलता की सीमा टूट जाती है। उससे अधिक उस अतिथि को झेलने की क्षमता उसमें समाप्त हो जाती है। उसे 'गेट आउट' कहने का मन करता है। आतिथ्य-सत्कार में भी अंतर आ जाता है। अतिथि अपने देवत्व को खोकर राक्षसत्व का बोध कराता है।

(ङ)एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

ज. अतिथि को देवता माना जाता है परंतु यदि वह अधिक समय तक ठहरे तो उसका देवत्व समाप्त हो जाता है क्योंकि देवता तो थोड़ी देर के लिए दर्शन देकर चले जाते हैं। वे अधिक समय तक नहीं ठहरते। उनमें ईर्ष्या-द्वेष के भाव नहीं होते। घरेलू परिस्थितियों की जटिलताओं का सामना उन्हें नहीं करना पड़ता। मनुष्य को उसकी परिस्थितियाँ प्रभावित करती हैं। घर की शांति को वह भंग नहीं करना चाहता। इस प्रकार विपरीत स्वभाव का एक ही स्थान में ठहरना नामुमकिन है।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

ज. लेखक सोच रहा था कि तीसरे दिन अतिथि की भावभीनी विदाई का वह क्षण आ जाना चाहिए। किंतु अतिथि ने

ऐसा नहीं किया। सुबह उठते ही उसने जब लेखक से अपने कपड़े धोबी को देने की बात कही तब लेखक को इस बात को सुनकर जो आघात लगा वह अप्रत्याशित था। इसका प्रभावलेखक पर ऐसा पड़ा कि वह सोचने पर मजबूर हो गया कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

2. 'संबंधों को संक्रमण के दौर से गुजरना'-इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

ज. संक्रमण का अर्थ है-एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने का समय। अर्थात् एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्रवेश करने की प्रक्रिया। इस अवस्था को संधिाकाल भी कहते हैं। इस स्थान पर आकर एक चीज अपना स्वरूप खो देती है तो दूसरा अपना स्वरूप ले लेती है। लेखक के साथ भी अतिथि के आने पर कुछ ऐसा ही हुआ। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था। घर के लोगों की शांति भंग होने लगी। अतिथि का मन भले ही घर लौटने का न हो परंतु उसे अपने घर की ओर चल देना चाहिए। इस प्रकार मधुर स्थितियों की कटुता को उजागर किया गया है।

3. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

ज. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के आतिथ्य में कमी आ गई। लंच और डिनर की विविधता कम हो गई। वह उसके जाने की प्रतीक्षा करने लगे। कभी कैलेंडर दिखाकर तो कभी नम्रता की आँखें दिखाकर। स्नेह-भीगी मुस्कुराहट गायब हो गई। घर की शांति गड़बड़ाने लगी। समीपता दूरी में बदलने लगी। वे उसे स्टेशन तक छोड़ने जाना चाहते हैं, परंतु अतिथि है कि जाने का नाम नहीं लेता। यह देखकर लेखक के व्यवहार में निम्न परिवर्तन आए -

1. खाने का स्तर डिनर से गिरकर खिचड़ी तक आ पहुँचा।
2. वह गेट आउट कहने को भी तैयार हो जाता है।
3. लेखक को अतिथि राक्षस के समान लगने लगता है।
4. अब अतिथि के प्रति सत्कार की कोई भावना नहीं बची।
5. भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण करने लगती हैं।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्याय लिखिए-

चाँद, जिक्र, आघात, ऊष्मा, अंतरंग।

ज: छात्र स्वयं करें

2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए

(क) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)

(ज) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।

(ख) किसी लॉण्डी पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे। (वाचक वाक्य)

(ज) क्या किसी लॉण्ड्री पर दे देने से जल्दी धुल जाएँगे?

(ग) सत्कार की उष्मा समाप्त हो रही थी। (भविष्यत् काल)

(ज)सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।

(घ) इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक वाची)।

(ज) इनके कपड़े कहाँ देने हैं?

(ङ) कब तक टिकेंगे ये? (नकारात्मक)

(ज) ये बहुत देर तक नहीं टिकेंगे।

3. पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए-

1. तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके।
2. तुम मेरी काफी मिट्टी खोद चुके।
3. आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।
4. शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।
5. तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

4. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए|

1. लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।
2. तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।
3. तुम्हें भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।।
4. कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फ़िल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।
5. भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

योग्यता-विस्तार

1. 'अतिथि देवो भव' उक्ति की व्याख्या करें तथा आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन करें।
इस उक्ति का अर्थ है कि अतिथि देवता के समान होता है। यह उक्ति पहले समय में कभी ठीक रही होगी। | आधुनिक युग में यह उक्ति उचित प्रतीत नहीं होती। आज लोगों के पास अपने लिए समय नहीं है। वे अतिथियों के स्वागत-सत्कार के लिए समय कैसे निकाले? आज के लोग कमाने, व्यापार बढ़ाने, कैरियर बनाने, पढ़ने-पढ़ाने में अधिक ध्यान देने लगे हैं। इसलिए आजकल अतिथि के आने पर उनकी खुशी बढ़ने की अपेक्षा कम होती है।

2. विद्यार्थी अपने घर आए अतिथियों के सत्कार का अनुभव कक्षा में सुनाएँ-
ज : विद्यार्थी स्वयं करें।

3. अतिथि के अपेक्षा से अधिक रुक जाने पर लेखक की क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हें क्रम से छाँटकर लिखिए-

- दूसरे दिन मन में आया कि बस इस अतिथि को अब और अधिक नहीं झेला जा सकता।
- तीसरे दिन उसका देवत्व समाप्त हो गया वह राक्षस दिखाई देने लगा।
- चौथे दिन मुस्कान फीकी पड़ गई। बातचीत रुक गई। डिनर का स्थान खिचड़ी ने ले लिया। मन में आया कि उसे 'गेट आउट' कह दिया जाए।

4. वैज्ञानिक चेतना के वाहक : चन्द्र शेखर वेंकट रामन

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा और क्या थे? ।

ज. रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा एक जिज्ञासु वैज्ञानिक भी थे। उनके अंदर सशक्त वैज्ञानिक जिज्ञासा थी। फलस्वरूप वे विश्वविख्यात वैज्ञानिक बने।।

2. समुद्र को देखकर रामन् के मन में कौन-सी दो जिज्ञासाएँ उठीं?

ज. समुद्र को देखकर रामन् के मन में समुद्र के नीला होने का कारण जानने की जिज्ञासा उठी। उन्होंने सोचा कि समुद्र का रंग नीला होने के अलावा और कुछ क्यों नहीं होता।

3. रामन् के पिता ने उनमें किन विषयों की सशक्त नींव डाली?

ज. रामन् के पिता गणित और भौतिकी के शिक्षक थे। उन्होंने हमेशा रामन् को इन दोनों विषयों के प्रति आकर्षित किया। इस कारण आगे चलकर रामन् ने जगत प्रसिद्ध पाई।

4. वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के अध्ययन के द्वारा रामन् क्या करना चाहते थे?

ज. वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के अध्ययन के द्वारा रामन् इनके पीछे छिपे वैज्ञानिक रहस्यों की परतें खोलना चाहते थे। इस दौरान उन्होंने अनेक देशी और विदेशी वाद्ययंत्रों का अध्ययन किया।

5. सरकारी नौकरी छोड़ने के पीछे रामन् की क्या भावना थी?

ज. सरकारी नौकरी छोड़ने के पीछे रामन् की भावना वैज्ञानिक अध्ययन और शोधकार्य करने की थी।

6. 'रामन् प्रभाव' की खोज के पीछे कौन-सा सवाल हिलोरें ले रहा था?

ज. 'रामन-प्रभाव' की खोज के पीछे समुद्र के नीले रंग की वजह का सवाल हिलोरें ले रहा था। उन्होंने आगे उसी | दिशा में प्रयोग किए। जिसकी परिणति रामन्-प्रभाव' की महत्त्वपूर्ण खोज के रूप में हुई।

7. प्रकाश तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने क्या बताया?

ज. प्रकाश की तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने बताया कि प्रकाश अति सूक्ष्म कणों की तीव्र धारा के समान है। उन्होंने | सूक्ष्म कणों की तुलना बुलेट से की और उसे 'फोटॉन' नाम दिया।

8. रामन् की खोज ने किन अध्ययनों को सहज बनाया?

ज. रामन् की खोज ने पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज बनाया। पहले उस नाम के लिए 'इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी' का सहारा लिया जाता था।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. कॉलेज के दिनों में रामन् की दिली इच्छा क्या थी?

ज. कॉलेज के दिनों में रामन् की दिली इच्छा थी कि वे अपनी सारा जीवन शोधकार्यों को पूरा करने में लगाए, परंतु | इसे कैरियर के रूप में अपनाने की उनके पास कोई खास व्यवस्था नहीं थी।

2. वाद्ययंत्रों पर की गई खोजों से रामन् ने कौन-सी भ्रांति तोड़ने की कोशिश की?

ज. वाद्ययंत्रों पर की गई खोजों से रामन् ने यह भ्रांति तोड़ने की कोशिश की कि भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्ययंत्रों की तुलना में घटिया है।

3. रामन् के लिए नौकरी संबंधी कौन-सा निर्णय कठिन था?

ज. रामन् के लिए नौकरी संबंधी यह निर्णय कठिन था, जब कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद खाली था और आशुतोष मुखर्जी ने उनसे इस पद को स्वीकार करने का आग्रह किया। प्रोफेसर की नौकरी की अपेक्षा उनकी सरकारी नौकरी ज्यादा वेतन तथा सुविधा से भरी थी, फिर भी उन्होंने प्रोफेसर की नौकरी को स्वीकार किया, क्योंकि उनके लिए सरकारी सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक सरस्वती की साधना थी इसलिए यह निर्णय करना सचमुच हिम्मत का काम था।

4. सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् को समय-समय पर किन-किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

ज. सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् को समय-समय पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया–

- सन् 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से उन्हें सम्मानित किया गया।
- सन् 1929 में 'सर' की उपाधि दी गई।
- सन् 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- सन् 1954 में 'भारत-रत्न' से सम्मानित किए गए। |
- रोम का मेत्यूसी पदक मिला।
- रायल सोसाइटी का यूज पदक मिला।
- फिलोडेल्फिया इंस्टीट्यूट का फ्रेंकलिन पदक मिला।
- सोवियत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार मिला आदि।

5. रामन् को मिलने वाले पुरस्कारों ने भारतीय-चेतना को जाग्रत किया। ऐसा क्यों कहा गया है?

ज. रामन् को मिलनेवाले पुरस्कारों ने भारतवर्ष को एक नया सम्मान और आत्मविश्वास दिया। रामन् नवयुवकों के प्रेरणास्रोत बन गए। उन्होंने एक नयी भारतीय चेतना को जन्म दिया। उनके अंदर एक राष्ट्रीय चेतना थी और वे देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन के प्रति समर्पित थे। उन्हें भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव था। अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध के बाद भी उन्होंने सैकड़ों छात्रों का मार्गदर्शन किया और देश के भावी नागरिकों को भी एक सफल वैज्ञानिक बनने की प्रेरणा दी।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए

1. रामन् के प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है?

ज. रामन् के प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग इसलिए कहा गया है, क्योंकि उनकी परिस्थितियाँ बिलकुल विपरीत थीं। वे बहुत महत्त्वपूर्ण तथा व्यस्त नौकरी पर थे। उन्हें हर प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त हो गई थी। समय की कमी थी। स्वतंत्र शोध के लिए पर्याप्त सुविधाएँ नहीं थीं। ले-देकर कलकत्ता में एक छोटी-सी प्रयोगशाला ही थी जिसमें बहुत कम उपकरण थे। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में शोध कार्य दृढ़ इच्छा शक्ति से ही संभव था। यह रामन् के मन का दृढ़ हठ था, जिसके कारण वे शोध जारी रख सके। इसलिए उनके प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग कहा गया है। यह हठयोग विज्ञान से संबंधित था, इसलिए आधुनिक कहना उचित था।

2. रामन् की खोज 'रामन् प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

ज. रामन् की खोज को 'राम-प्रभाव' के नाम को जाना जाता है। रामन् ने अनेक ठोस और तरल पदार्थों पर प्रकाश की किरणों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आ जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण के फोटॉन तरल या रवेदार पदार्थ से गुजरते हुए उनके अणुओं से टकराते हैं तो इस टकराव के परिणाम से या तो ये ऊर्जा का कुछ अंश पा जाते हैं या कुछ खो देते हैं। दोनों ही स्थितियाँ प्रकाश के वर्ण में बदलाव लाती हैं। एकवर्षीय प्रकाश तरल या ठोस रवों से गुरजते हुए जिस परिणाम में ऊर्जा खोता या पाता है उसी के अनुसार उसका वर्ग परिवर्तित हो जाता है।

3. 'रामन् प्रभाव' की खोज से विज्ञान के क्षेत्र में कौन-कौन से कार्य संभव हो सके?

ज. रामन् की खोज की वजह से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया। पहले इस काम के इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी' का सहारा लिया जाता था। यह मुश्किल तकनीक है और ग़लतियों की संभावना बहुत अधिक रहती है। रामन् की खोज के बाद पदार्थों की आणविक और परमाणविक संरचना के अध्ययन के लिए रामन् 'स्पेक्ट्रोस्कोपी' का सहारा लिया जाने लगा। यह तकनीक एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक जानकारी देती है। इस जानकारी के कारण पदार्थों का संश्लेषण करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का कृत्रिम रूप से निर्माण संभव हो सका।

4. देश के वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालिए।

ज. रामन् के अंदर एक राष्ट्रीय चेतना थी तथा वे देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और चिंतन के विकास के प्रति समर्पित थे। उन्हें अपने शुरुआती दिन हमेशा ही याद रहे जब उन्हें संघर्ष करना पड़ा। इसलिए उन्होंने एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध संस्थान की स्थापना की जो बंगलौर में स्थित है और उन्हीं के नाम पर अर्थात् 'रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट' के नाम से जानी जाती है। भौतिकी में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने 'इंडियन जनरल ऑफ फिजिक्स' नामक शोध-पत्रिका आरंभ की। विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए वे करंट साइंस' नामक पत्रिका का संपादन करते थे। रामन् केवल प्रकाश की किरणों तक ही नहीं सिमटे थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व कें प्रकाश से पूरे देश को आलोकित और प्रकाशित किया।

5. सर वेंकट रामन् के जीवन से प्राप्त होनेवाले संदेशों को अपने शब्दों में लिखिए।

ज. सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने कहीं भाषण के द्वारा अपना संदेश प्रसारित नहीं किया। उन्होंने अपना जीवन जिस प्रकार से जिया वह भाषण से भी प्रभावी संदेश देने का माध्यम था। उनका कर्मशील जीवन मुखर संदेश से भी प्रखर था। उन्होंने वैज्ञानिक शोध में अपना जीवन समर्पित कर दिया। वे सरकारी नौकरी में रहते हुए भी कलकत्ता की प्रयोगशाला में प्रयोग करते रहे। जब उन्हें भौतिकी विभाग के प्रोफेसर की नौकरी मिली तो कम वेतन और कम सुख-सुविधाओं के बावजूद भी उन्होंने वह नौकरी स्वीकार कर ली। इससे हमें यह संदेश मिलता है कि हमें धन और सुख-सुविधा का मोह त्यागकर शोध या किसी अन्य कल्याणकारी कार्य के लिए अपना जीवन अर्पित करना चाहिए। उन्होंने जिस प्रकार अनेक नवयुवकों को शोध के लिए प्रेरित किया वह भी अनुकरणीय है। उन्होंने राष्ट्रीयता एवं भारतीय संस्कारों को नहीं त्यागा। उन्होंने अपना दक्षिण भारतीय पहनावा भी नहीं छोड़ा।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए

1. उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थी।

ज. आशय-वेंकट रामन् सच्चे सरस्वती साधक थे। वे जिज्ञासु प्रकृति के वैज्ञानिक तथा अन्वेषक थे। उन्होंने सरकारी सुख-सुविधाओं की अपेक्षा वैज्ञानिक खोजों को अधिक महत्त्व दिया। इसके लिए वित्त-विभाग की ऊँची नौकरी छोड़ दी। कलकत्ता विश्वविद्यालय की कम सुविधावाली नौकरी स्वीकार कर ली। इस प्रकार वे शिक्षण पाने व देने के काम को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे और उन्होंने यही किया।

2. हमारे पास ऐसी न जाने कितनी ही चीजें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं।

ज. आशय-हमारे आसपास के वातावरण में अनेक प्रकार की वस्तुएँ बिखरी होती हैं। उनके बारे में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है। उन बिखरी चीजों को सही ढंग से सँवारने वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है, जो उन्हें नया रूप दे सकते हैं। इन घटनाओं को अनुसंधान करनेवाले खोजियों की तलाश रहती है।

3. यह अपने-आप में एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था।

ज. आशय-हठयोग का अर्थ है-जिद करनेवाला। वह यह नहीं देखता कि परिस्थितियाँ उसके अनुकूल हैं या नहीं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वह अपनी इच्छा शक्ति को दबने नहीं देता। अपने कार्य को पूरा करके ही रहता है। रामन् कलकत्ता में सरकारी नौकरी करने के दौरान भी बहू बाजार में स्थिति इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस की कामचलाऊ प्रयोगशाला के कामचलाऊ उपकरणों से प्रयोग करते थे। यह अपने-आप में आधुनिक हठयोग का उदाहरण है।

(घ) उपयुक्त शब्द का चयन करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी, इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ़ साइंस, फिलॉसॉफिकल मैंगज़ीन, भौतिकी, रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट।

1. रामन् का पहला शोध पत्र <u>फिलॉसॉफिकल मैगजीन</u> में प्रकाशित हुआ था।
2. रामन् की खोज <u>भौतिकी</u> के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी।
3. कोलकाता की मामूली-सी प्रयोगशाला का नाम <u>इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ़ सांइस</u> था।
4. रामन् द्वारा स्थापित शोध संस्थान '<u>रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट</u>' नाम से जाना जाता है।
5. पहले पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन करने के लिए <u>इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी</u> का सहारा लिया जाता था।

भाषा-अध्ययन

1.नीचे कुछ समानदर्शी शब्द दिए जा रहे हैं, जिनका अपने वाक्य में इस प्रकार प्रयोग करें कि उनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो सके। .

(क) प्रमाण-प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

(ख) प्रणाम-हमें प्रात:काल उठकर माता-पिता को प्रणाम करना चाहिए।

(ग) धारणा-मेरी धारणा है कि सारे चोर बुरे इंसान नहीं होते।

(घ) धारण-मेरे पिता जी ने मौन व्रत धारण किया है।

(ङ) पूर्ववर्ती-भारत के पूर्ववर्ती इलाकों में बिजली की कमी हो रही है।

(च) परवर्ती-सम्राट अशोक के परवर्ती शासकों ने मौर्य साम्राज्य को कमज़ोर कर दिया।

(छ) परिवर्तन-परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

(ज) प्रवर्तन-गौतम बुद्ध ने बौद्ध मत का प्रवर्तन किया।

2.रेखांकित शब्द के विलोम शब्द का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(क) मोहन के पिता मन से सशक्त होते हुए भी तन से अशक्त हैं।

(ख) अस्पताल के अस्थायी कर्मचारियों को स्थायी रूप से नौकरी दे दी गई है।

(ग) रामन् ने अनेक ठोस रवों और तरल पदार्थों पर प्रकाश की किरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

(घ) आज बाजार में देशी और विदेशी दोनों प्रकार के खिलौने उपलब्ध हैं।

(ङ) सागर की लहरों को आकर्षण उसके विनाशकारी रूप को देखने के बाद विकर्षण में परिवर्तित हो जाता है।

3. नीचे दिए उदाहरण में रेखांकित अंश में शब्द-युग्म का प्रयोग हुआ है

उदाहरण—चाऊतान को गाने-बजाने में आनंद आता है। उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) सुख-सुविधा : मालिक अपने कर्मचारियों की सुख-सुविधा का ध्यान रखता है।

(ख) अच्छा-खासा : रामन् का विश्व-भर में अच्छा-खासा प्रभाव था।

(ग) प्रचार-प्रसार : हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है।

(घ) आस-पास : हमें अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चहिए।

4. प्रस्तुत पाठ में आए अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों को निम्न तालिका में लिखिए-

अनुस्वार	अनुनासिक
(क) अंदर	ढूँढ़ते
(ख) रंग	जहाँ
(ग) प्रेसीडेंसी	जाएँ
(घ) संस्था	पहुँचना
(ङ) वेंकट रामन्	सुविधाएँ

5. पाठ में निम्नलिखित विशिष्ट भाषा प्रयोग में आए हैं। सामान्य शब्दों में इनका आशय स्पष्ट कीजिए।

घंटों खोए रहते-बहुत देर तक ध्यान में लीन रहते।।
स्वाभाविक रुझान बनाए रखना-सहज रूप से रुचि बनाए रखना।
अच्छा-खासा काम किया-अच्छी मात्रा में ढेर सारा काम किया।
हिम्मत का काम था-कठिन काम था।
सटीक जानकारी-बिलकुल सही और प्रमाणिक जानकारी।
काफी ऊँचे अंक हासिल किए-बहुत अच्छे अंक पाए।
कड़ी मेहनत के बाद खड़ा किया था-बहुत मेहनत के बाद शीघ्र संस्थान की स्थापना की थी।
मोटी तनख्वाह-बहुत अधिक आय या वेतन।

6. पाठ के आधार पर मिलान कीजिए-

नीला	समुद्र
पिता	नींव
तैनाती	कलकत्ता
उपकरण	कामचलाऊ
घटिया	भारतीय वाद्ययंत्र
फोटॉन	वैज्ञानिक रहस्य
भेदन	रव

7. पाठ में आए रंगों की सूची बनाइए। इनके अतिरिक्त दस रंगों के नाम और लिखिए।

पाठ में आए रंग-बैंजनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल।।

अन्य रंग-काला, सफेद, गुलाबी, मैरुन, मुंगिया, तोतिया, फिरोज़ी, भूरा, सलेटी।

8. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार 'ही' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।
उदाहरणः उनके ज्ञान की सशक्त नींव उनके पिता ने ही तैयार की थी।

1. मुझे विद्यालय तो जाना ही था।
2. उसे कार्य तो करना ही पड़ेगा।
3. आप कब तक ऐसे ही बैठे रहेंगे।
4. रमेश ने ही मुझे बुलाया था।
5. तुम हमेशा ही प्रथम आते हो।

योग्यता-विस्तार

1. 'विज्ञान का मानव विकास में योगदान' विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. भारत में किन-किन वैज्ञानिकों को नोबल पुरस्कार मिला है? पता लगाइए और लिखिए।
3. न्यूटन के आविष्कार के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

ज : विद्यार्थी स्वयं करें।

5.शुक्र तारे के समान

मौखिक:

निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे?

ज. महादेव भाई अपना परिचय गाँधी जी के 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

2. 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?

ज. अंग्रेजी संपादक हार्नीमैन 'यंग इंडिया' के लिए लिखते थे, जिन्हें देश निकाले की सजा देकर इंग्लैंड भेज दिया था। इस कारण 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी रहने लगी।

3. गांधी जी ने 'यंग इंडिया' प्रकाशित करने के विषय में क्या निश्चय किया?

ज. गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' को सप्ताह में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया।

4. गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई कहाँ नौकरी करते थे?

ज. गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई भारत सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे।

5. महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था?

ज. महादेव भाई के झोलों में ताजी राजनीतिक घटनाओं, जानकारियों, चर्चाओं से संबंधित पुस्तकें, समाचार पत्र, मासिक पत्र आदि भरे रहते थे।

6. महादेव भाई ने गांधी जी की कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद किया था?

ज. महादेव भाई ने गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया।

7. अहमदाबाद से कौन-से दो साप्ताहिक निकलते थे?

ज. अहमदाबाद से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र थे-'यंग इंडिया' तथा 'नव जीवन'।

8. महादेव भाई दिन में कितनी देर काम करते थे?

ज. महादेव भाई लगातार चलने वाली यात्राओं, मुलाकातों, चर्चाओं और बातीचत में अपना समय बिताते थे। इस प्रकार वे 18-20 घंटे तक काम करते थे।

9. महादेव भाई से गांधी जी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है?

ज. महादेव भाई से गाँधी जी की निकटता इस बात से सिद्ध होती है कि वे बाद के सालों में प्यारेलाल को बुलाते हुए 'महादेव' पुकार बैठते थे।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. गांधी जी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?

ज. महादेव भाई 1917 में गांधी के पास पहुँचे। गांधी जी ने उनको पहचानकर उन्हें उत्तराधिकारी का पद सौंपा था। 1919 में जलियाँबाग कांड के समय जब गांधी जी पंजाब जा रहे थे तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

2. गांधी जी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?

ज. महादेव भाई पहले उनकी समस्याओं को सुनते थे। उनकी संक्षिप्त टिप्पणी तैयार करके गाँधी जी के सामने पेश । करते थे तथा उनसे लोगों की मुलाकात करवाते थे।

3. महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?

ज. महादेव भाई ने गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी के अलावा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया। इसके अलावा 'चित्रांगदा', 'विदाई का अभिशाप', 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद उनकी साहित्यिक देन है।

4. महादेव, भाई की अकाल मृत्यु को कारण क्या था?

ज. महादेव भाई की अकाल मृत्यु को कारण उनकी व्यस्तता तथा विवशता थी। सुबह से शाम तक काम करना और गरमी की ऋतु में ग्यारह मील पैदल चलना ही उनकी मौत का कारण बने।

5. महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गांधी जी क्या कहते थे?

ज. महादेव भाई के द्वारा लिखित नोट बहुत ही सुंदर और इतने शुद्ध होते थे कि उनमें कॉमी और मात्रा की भूल और छोटी गलती भी नहीं होती थी। गांधी जी दूसरों से कहते कि अपने नोट महादेव भाई के लिखे नोट से ज़रूर मिला लेना।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया?

ज. पंजाब में फ़ौजी शासन ने काफी आतंक मचाया। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ्तार किया गया। उन्हें उम्र कैद की सज़ा देकर काला पानी भेज दिया गया। 1919 में जलियाँवाला बाग में सैकड़ों निर्दोष लोगों को गोलियों से भून दिया गया। 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा दी गई।

2. महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाडला बना दिया था?
ज. महादेव भाई गांधी जी के लिए पुत्र के समान थे। वे गांधी का हर काम करने में रुचि लेते थे। गांधी जी के साथ देश भ्रमण तथा विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेते थे। वे गांधी जी की गतिविधियों पर टिप्पणी करते थे। महादेव जी की लिखावट बहुत सुंदर, स्पष्ट थी। वे इतना शुद्ध लिखते थे कि उसमें मात्रा और कॉमा की भी अशुधि नहीं होती थी। वे पत्रों का जवाब जितनी शिष्टता से देते थे, उतनी ही विनम्रता से लोगों से मिलते थे। वे विरोधियों के साथ भी उदार व्यवहार करते थे। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें सभी का लाडला बना दिया।
3. महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?
ज. पूर्णत: शुद्ध और सुंदर लेख लिखने में महादेव भाई का भारत भर में कोई सानी नहीं था। वे तेज़ गति से लंबी लिखाई कर सकते थे। उनकी लिखावट में कोई भी गलती नहीं होती थी। लोग टाइप करके लाई 'रचनाओं को महादेव की रचनाओं से मिलाकर देखते थे। उनके लिखे लेख, टिप्पणियाँ, पत्र और गाँधीजी के व्याख्यान सबके सब ज्यों-के-ज्यों प्रकाशित होते थे।
(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-
1.'अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे।'
ज. आशय-महादेव भाई गांधी जी के निजी सचिव और निकटतम सहयोगी थे। इसके बाद भी उन्हें अभिमान छू तक न गया था। वे गांधी जी के प्रत्येक काम को करने के लिए तैयार रहते थे। वे गांधी जी की प्रत्येक गतिविधि, उनके भोजन और दैनिक कार्यों में सदैव साथ देते थे। वे स्वयं को गांधी का सलाहकार, उनका रसोइया, मसक से पानी ढोने वाला तथा बिना विरोध के गधे के समान काम करने वाला मानते थे।
2. इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफेद और सफ़द को स्याह करना होता था।
ज- महादेव ने गाँधी जी के सान्निध्य में आने से पहले वकालत का काम किया था। इस काम में वकीलों को अपना केस जीतने के लिए सच को झूठ और झूठे को सच बताना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि इस पेशे में स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था।
3. देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।
ज. आशय- नक्षत्र मंडल में करोड़ों तारों के मध्य शुक्रतारा अपनी आभा-प्रभा से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है, भले ही उसका चमक अल्पकाल के लिए हो। यही हाल महादेव भाई देसाई का था। उन्होंने अपने मिलनसार स्वभाव, मृदुभाषिता, अहंकार रहित विनम्र स्वभाव, शुद्ध एवं सुंदर लिखावट तथा लेखक की मनोहारी शैली से सभी का दिल जीत लिया था। अपनी असमय मृत्यु के कारण वे कार्य-व्यवहार से अपनी चमक बिखेर कर अस्त हो गए।

4. उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

ज. महादेव इतनी शुद्ध और सुंदर भाषा में पत्र लिखते थे कि देखने वालों के मुँह से वाह निकल जाती थी। गाँधी जी के पत्रों का लेखन महादेव करते थे। वे पत्र जब दिल्ली व शिमला में बैठे वाइसराय के पास जाते थे तो वे उनकी सुंदर लिखावट देखकर दंग रह जाते थे।

भाषा-अध्ययन

1.'इक' प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए-

सप्ताह – साप्ताहिक

अर्थ – आर्थिक

साहित्य – साहित्यिक

धर्म – धार्मिक

व्यक्ति – वैयक्तिक

मास – मासिक

राजनीति – राजनैतिक

वर्ष – वार्षिक

2. नीचे दिए गए उपसर्गों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए-

अ, नि, अन, दुर, वि, कु, पर, सु, अधि

आर्य – अन + आर्य = अनार्य आगत – सु + आगत = स्वागत

डर – नि + डर = निडर आकर्षक – अन + आकर्षक = अनाकर्षक

क्रय – वि + क्रय = विक्रय मार्ग – कु + मार्ग = कुमार्ग

उपस्थित – अन + उपस्थित = अनुपस्थित लोक – पर + लोक = परलोक

नायक – वि + नायक = विनायक भाग्य – दुर + भाग्य = दुर्भाग्य

3. निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

आड़े हाथों लेना, दाँतों तले अंगुली दबाना, लोहे के चने चबाना, अस्त हो जाना, मंत्रमुग्ध करना।

मुहावरे – वाक्य प्रयोग

1. आड़े हाथों लेना – देर से घर आने पर पिता ने पुत्र को आड़े हाथों लिया।
2. दाँतों तले अँगुली दबाना – लक्षमीबाई का रण कौशल देख अंग्रेज़ों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।
3. लोहे के चने चबाना – इस रेगिस्तान को हरा-भरा बनाना लोहे के चने चबाने जैसा है।
4. अस्त हो जाना – अपनी प्रतिभा की चमक दिखाकर महादेव भाई असमय अस्त हो गए।
5. मंत्रमुग्ध करना – सुमन के बुने स्वेटर की बुनाई मुझे मंत्रमुग्ध कर रही है।

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए-

वारिस – उत्तराधिकारी जिगरी – घनिष्ठ, पक्का कहर – घोर मुसीबत

मुकाम – लक्ष्य, मंजिल रूबरू – आमने-सामने फ़र्क – अंतर

तालीम – शिक्षा गिरफ्तार – कैद, बंदी

5. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए-

उदाहरण : गांधी जी ने महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

गांधी जी महादेव भाई को अपना वारिस कहा करते थे।

1.महादेव भाई अपना परिचय 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

ज.महादेव भाई अपना परिचय पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में दिया करते थे।

2.पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़ते रहते थे।

ज.पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के भवन पर उमड़ा करते थे।

3.दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलते थे।

ज.दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकला करते थे।

4.देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी करते थे।

ज.देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी किया करते थे।

5.गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे।

ज. गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाया करते थे।

योग्यता-विस्तार

1. गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' को पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

ज- विद्यार्थी स्वयं करें।

2. जलियाँवाला बाग में कौन-सी घटना हुई थी? जानकारी एकत्रित कीजिए।

ज- देश को स्वतंत्रता दिलाने के प्रयास में जलियाँवाला बाग में एक आम सभा आयोजित की गई थी। इसमें हजारों लोग शामिल हुए। इस सभा में बच्चे, बूढ़े, नवयुवक, स्त्री-पुरुष ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। लोग शांतिपूर्वक सभा कर रहे थे, तभी जनरल डायर ने उपस्थित जनसमूह पर गोली चलाने का निर्देश दे दिया। इस नरसंहार में हजारों लोग मारे गए। इस दिन को भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में काले दिन के रूप में जाना जाता है। इससे देश में अंग्रेजों के प्रति घृणा तथा स्वतंत्रता प्राप्ति की ललक और प्रगाढ़ हो उठी।

3. अहमदाबाद में बापू के आश्रम के विषय में चित्रात्मक जानकारी एकत्र कीजिए।

ज- छात्र स्वयं करें।

4. सूर्योदय के 2-3 घंटे पहले पूर्व दिशा में या सूर्यास्त के 2-3 घंटे बाद पश्चिम दिशा में एक खूब चमकाता हुआ ग्रह दिखाई देता है, वह शुक्र ग्रह है। छोटी दूरबीन से इसकी बदलती हुई कलाएँ देखी जा सकती हैं, जैसे चंद्रमा की कलाएँ।

ज- छात्र शुक्र ग्रह को देखकर इसकी कलाएँ स्वयं देखें।

5. वीराने में जहाँ बत्तियाँ न हों वहाँ अँधेरी रात में जब आकाश में चाँद भी दिखाई न दे रहा हो तब शुक्र ग्रह (जिसे हम शुक्र तारा भी कहते हैं) के प्रकाश से अपने साए को चलते हुए देखा जा सकता है। कभी अवसर मिले तो इसे स्वयं अनुभव करके देखिए।

ज- छात्र स्वयं ऐसा अनूठा अनुभव करें।

परियोजना कार्य

1. सूर्यमंडल में नौ ग्रह हैं। शुक्र सूर्य से क्रमशः दूरी के अनुसार दूसरा ग्रह है और पृथ्वी तीसरा। चित्र सहित परियोजना पुस्तिका में अन्य ग्रहों के क्रम लिखिए।

ज- छात्र स्वयं करें।

2. 'स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी का योगदान' विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

ज- छात्र उक्त विषय पर स्वयं परिचर्चा का आयोजन करें।

3. भारत के मानचित्र पर निम्न स्थानों को दर्शाएँ-

अहमदाबाद, जलियाँवाला बाग (अमृतसर), कालापानी (अंडमान), दिल्ली, शिमला, बिहार, ज प्रदेश।

ज- छात्र स्वयं करें।

अन्य पाठेतर हल

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. महादेव भाई अपना परिचय 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।

ज- महादेव भाई अपना परिचय 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में दिया करते थे।

2. पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़ते रहते थे।

ज - पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी की भवन पर उमड़ा करते थे।

3. दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलते थे।

ज - दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकला करते थे।

4. देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी करते थे।

ज - देश-विदेश के समाचार-पत्र गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी किया करते थे।

5. गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे।

ज - गांधी जी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाया करते थे।

6. मणिभवन पर लोग क्यों आया करते थे?

ज - अंग्रेजों के जुल्म और अत्याचार के बारे में बताने वाले पीड़ित लोग गामदेवी के मणिभवन पर आते थे और महादेव जी के माध्यम से गांधी जी को अपनी व्यथा बताते थे।

7. हार्नीमैन कौन थे? उन्हें क्या सज़ा मिली?

ज - हार्नीमैन 'क्रानिकल' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र के निडर अंग्रेज़ संपादक थे। अंग्रेज़ सरकार ने उनके लेखन से रुष्ट होकर देश निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड भेज दिया।

8. समय का अभाव होने पर भी महादेव भाई ने किस प्रकार साहित्यिक योगदान दिया?

ज - महादेवभाई के भाई के पास समय का नितांत अभाव रहता था फिर भी उन्होंने 'चित्रांगदा', कच देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका, 'शरदबाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद करके अपना साहित्यिक योगदान दिया।

9. नरहरिभाई कौन थे?

ज - नरहरिभाई महादेव जी के जिगरी दोस्त थे। दोनों ने एक साथ वकालत की पढ़ाई की और साथ-साथ अहमदाबाद में वकालत भी शुरू की।

10. महादेव जी की अकाल मृत्यु का प्रमुख कारण क्या था?

ज - महादेव जी की अकाल मृत्यु का कारण था-मगनवाड़ी से वर्धा की असह्य गरमी में पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचना और वहाँ काम करना। आते-जाते उन्हें ग्यारह मील की दूरी तय करनी होती थी। उन्हें लंबे समय तक वहाँ आना-जाना पड़ा था।

11. महादेव भाई स्वयं को गांधी जी का 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' क्यों कहते थे?

ज - महादेव भाई गांधी जी के निजी सचिव थे। वे गांधी जी के साथ रहकर उनके भोजन का ध्यान रखते थे तथा गांधी जी के काम को करते हुए उनकी राजनैतिक गतिविधियों का विवरण समाचार-पत्रों को भेजते थे। इसलिए वे स्वयं को 'पीर बावर्ची-भिश्ती-खर' कहते थे।

12. गांधी जी ने महादेव भाई को अपने उत्तराधिकारी का पद कब सौंपा?

ज - महादेव भाई जब 1917 में गांधी जी के पास आए तभी गांधी जी ने उनकी अद्‌भुत प्रतिभा को पहचान लिया और उन्हें अपने उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया।

13. गांधी जी से पहले 'यंग इंडिया' का संपादन कौन करते थे?

ज - 'यंग इंडिया' का संपादन जब गांधी जी के हाथ आया, उससे पहले मुंबई (बंबई) में तीन नेता थे-शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास, ये तीनों लोग 'यंग इंडिया' का संपादन करते थे।

14. गांधी जी के पास किनके-किनके पत्र आते थे?

ज - गांधी जी के पास सभी प्रांतों के उग्र और उदार देश भक्तों, क्रांतिकारियों, देश-विदेश के सुप्रसिद्ध जाने-माने लोगों, संवाददाताओं आदि के पत्र आते थे, जिनकी चर्चा गांधी जी 'यंग इंडिया' के कालमों में करते थे।

15. महादेव की लिखावट के बारे में सिविलियन और गवर्नर की क्या राय थी?
ज - महादेव भाई की सुंदर और त्रुटिहीन लिखावट देख बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर की राय यह थी कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला खोजने पर भी नहीं मिलता।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखक ने महादेव के स्वभाव की तुलना किससे की है और क्यों?
ज - लेखक ने महादेव के स्वभाव की तुलना ज प्रदेश और बिहार में हजारों मील तक दूर-दूर गंगा-यमुना के समतल मैदानों से की है क्योंकि जिस प्रकार इन मैदानों में चलने से ठेस नहीं लगती, उसी प्रकार महादेव से मिलने वाले को प्रेम और अपनत्व की अनुभूति होती थी। महादेव के साथ हुई मुलाकात में लोगों को सहृदयता, विनम्रता होती थी। जैसे गंगा के मैदानी भागों में 'कंकरी' तक नहीं मिलती थी। उसी प्रकार महादेव के स्वभाव से किसी को ठेस नहीं पहुँचती थी।

2. गांधी जी यंग इंडिया के संपादक किस प्रकार बने?
ज - शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास-ये तीनों नेता मिलकर 'यंग इंडिया' नामक साप्ताहिक पत्र निकालते थे। इस अंग्रेजी साप्ताहिक में लेखन का मुख्य कार्य हार्नीमैन करते थे, जिन्हें काले पानी की सजा देकर इंग्लैंड भेजा जा चुका था। साप्ताहिक के लिए लेख की कमी होने पर ये नेता गांधी जी के पास आए और उनसे 'यंग इंडिया' का संपादक बनने का अनुरोध किया। गांधी जी उनका अनुरोध कर 'यंग इंडिया' के संपादक बन गए।

3. काम में रात और दिन के बीच महादेव के लिए शायद ही कोई फर्क रहा हो-कथन के आलोक में उनकी व्यस्त जीवन शैली पर प्रकाश डालिए।
ज - महादेव भाई समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और पुस्तकें पढ़ते तथा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के लिए लेख लिखते। वे गांधी जी के साथ लगातार चलने वाली यात्राएँ करते। वे हर स्टेशन पर उपस्थित जनता का विशाल समुदाय, जगह-जगह आयोजित सभाएँ, लोगों से मुलाकातें, बैठकें और बातचीत करते। इनके बीच वे अपने लिए भी मुश्किल से समय निकाल पाते। इस प्रकार काम में उनके लिए दिन-रात बराबर था।

4. महादेव भाई के चरित्र से आप कौन-कौन से मूल्य अपनाना चाहेंगे?
ज - महादेव भाई के चरित्र में एक नहीं बहुत से मानवीय मूल्यों का संगम था जो उन्हें दूसरों से अलग तथा जन-जन के बीच लोकप्रिय बनाए हुए था। उनके चरित्र से समय का नियोजन कर हर काम समय पर करने का गुण, अपने स्वभाव में नम्रता-विनम्रता, सहनशीलता, उदारता जैसे मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहूँगा। इसके अलावा देश-प्रेम की भावना तथा सेवा भावना जैसे मूल्य भी अपनाना चाहूँगा।

6 रैदास पद

1. निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** दीजिए

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

ज. पहले पद में भगवान और भक्त की चंदन-पानी, घन-वन-मौर, चंद्र-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोना-सुहागा आदि से तुलना की गई है। कवि ने अपनी भक्ति के माध्यम से प्रभु के नाम की लगन में रम जाने की इच्छा व्यक्त की है।

(ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है; जैसे-पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

ज. पहले पद में भगवान और भक्त की चंदन-पानी, घन-वन-मौर, चंद्र-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोना-सुहागा आदि से तुलना की गई है। कवि ने अपनी भक्ति के माध्यम से प्रभु के नाम की लगन में रम जाने की इच्छा व्यक्त की है। मोरा – चकोरा बाती – राती धागा – सुहागा दासा – रैदासा

(ग) पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबंध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए

उदाहरणः दीपक बाती …….. ………. ……. ……… ……… …….

ज.चंदन – बास घन बन – मोर चंद – चकोर

मोती – धागा सोना – सुहागा स्वामी – दास

(घ) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

ज. दूसरे पद में 'गरीब निवाजु' ईश्वर को कहा गया है। जिस व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा होती है वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। नीच से नीच व्यक्ति का भी उद्धार हो जाता है। ऐसे लोग जो स्पर्श दोष के कारण हाथ लगने पर अपने-आपको अपवित्र मानते हैं। ऐसे दोनों पर दया करनेवाले प्रभु ही हैं जो दुखियों के दर्द से द्रवित हो जाते हैं।

(ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

ज. इस पंक्ति का आशय है कि सांसारिक लोग नीच जाति में उत्पन्न होनेवालों के प्रति स्पर्श दोष मानते हुए उन्हें अछूत मानते हैं, पर ईश्वर उन लोगों पर भी कृपा करते हैं। उनका उद्धार कर देते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में भक्त की भक्ति ही श्रेष्ठ है। उसका प्रेम ही सर्वोपरि है। इसलिए प्रभु को पतित पावन, भक्त-वत्सल, दीनानाथ कहा जाता है।

(च) "रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

ज. रैदास ने अपने स्वामी को गरीब निवाजु, लाल, गोबिंद, गुसाई, हरि, लाल आदि नामों से पुकारा है, नाम भले ही अनेक हो, परंतु दीनदयाल गरीबों का उद्धार करने वाले हैं। वे सभी पर अपना प्रेम लुटाते

बाती – बत्ती छत्रु – छत्र गुसईया – गोसाईं जोति – ज्योति धरै – धारण

(छ) निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसईआ।

ज.

मोरा – मोर	**चंद – चाँद**	**बाती – बत्ती**	**जोति – ज्योति**
बरै – जले	**राती – रात**	**छत्रु – छत्र**	**धरै – धारण**
छोति – छुआछूत	**तुहीं – तुम ही**	**गुसईया – गोसाई**	

2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए

(क) जाकी अँग-अँग बास समानी

ज. इस पंक्ति का भाव यह है कि भक्त स्वयं गुणों से रहित है। वह पानी के समान रंग-गंध रहित है, लेकिन ईश्वर रूपी चंदन की समीपता पाकर धन्य हो जाता है। वह गुणों की प्राप्ति कर लेता है। जैसे पानी में घिसकर चंदन का रंग निखरता है उसी प्रकार भक्तों की भक्ति से प्रभु का महत्त्व बढ़ जाता है। भक्त और भगवान इतने समीप आ जाते हैं कि भक्त के अंग-अंग में ईश्वर की सुगंध समा जाती है। भक्त का रोम-रोम ईश्वर भक्ति से प्रसन्न हो जाता है।

(ख) जैसे चितवत चंद चकोरा

ज. भक्त हमेशा भवसागर से पार करानेवाले परमात्मा के प्रति स्वयं को अर्पित कर देना चाहता है। हर क्षण उसी के रूप-दर्शन करने की इच्छा करता है। जिस प्रकार चकोर दिन-रात चाँद को निहारना चाहता है। उसी प्रकार रैदास भी प्रभु रूपी चाँद को एकटक निहारना चाहते हैं इसलिए एक क्षण के लिए भी उनका ध्यान प्रभु भक्ति से नहीं हटता।।

(ग) जाकी जोति बरै दिन राती

ज. जिसकी ज्योति दिन-रात जलती रहती है। अर्थात् कवि स्वयं को बत्ती और प्रभु को ऐसा दीपक मानते हैं, जिसकी ज्योति दिन-रात जलती रहती है, यानी रैदास जी दिन-रात प्रभु की भक्ति से आलोकित रहना चाहते हैं।

(घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

ज. हे प्रभु! आपके अतिरिक्त भक्तों को इतना मान-सम्मान देनेवाला कोई और नहीं है। अर्थात् समाज में नीची जाति में उत्पन्न होने के कारण आदर-सम्मान मिलना कठिन होता है परंतु ईश्वर के यहाँ जातिगत भेद-भाव नहीं होता। वे सबके सम्मान की लाज रखते हैं। प्रभु ही सबका कल्याण करते हैं। उनके अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं है जो गरीबों और दोनों की खोज-खबर रखता है। ईश्वर ही अछूतों को ऊँचे पद पर आसीन करते हैं।

(ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

ज. कवि ने ईश्वर को पतित पावन, भक्त वत्सल, दीनानाथ व उद्धारक कहा है। निम्न श्रेणी के लोगों को भी प्रभु ऊँचा कर देता है। वह अपने भक्तों पर दया करता है तथा उनका उद्धार कर देता है। उनका गोबिंद किसी से नहीं डरता। कवि ने प्रभु को नाम देकर भी उसके निराकार रूप की ही चर्चा की है। गरीबों के दु:ख-दर्द को समझनेवाला वही ईश्वर है। वहीं उन्हें पीड़ाओ से मुक्ति दिलाने वाला भी है।

3. रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

ज. रैदास ने पहले पद में विविध उदाहरणों द्वारा अपनी निराकार भक्ति प्रकट की है। वे अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं। उनका प्रभु घट-घटवासी है। वे अपने भगवान में इस प्रकार मिल गए हैं कि उनको अलग करके देखा नहीं जा सकता। कवि ने दूसरे पद में अपने आराध्य के दीनदयाल व सर्वगुण संपन्न रूप का गुणगान किया है जो ऊँच-नीच का भेद-भाव नहीं जानता तथा किसी भी कुल–गोत्र में उत्पन्न अपने भक्त को सहज भाव से अपना कर उसे दुनिया में सम्मान दिलाता है या उसे सांसारिक बंधनों से मुक्त कर अपने चरणों में स्थान देता है। नामदेव, कबीर, सधना आदि निम्न जाति में उत्पन्न भक्तों को समाज में उच्च स्थान दिलाने तथा उनका उद्धार करने का उदाहरण देकर कवि ने अपने कथन को प्रमाणित किया है।

योग्यता-विस्तार

1. भक्त कवि कबीर, गुरु नानक, नामदेव और मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए।

ज : स्वयं करें।

2. पाठ में आए दोनों पदों को याद कीजिए और कक्षा में गाकर सुनाइए।

ज : छात्र स्मरण कर कक्षा में सुनाएँ।

7.दोहे

1. निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** दीजिए

(क) प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?

ज. प्रेम आपसी लगाव और विश्वास के कारण होता है। यदि एक बार यह लगाव या विश्वास टूट जाए तो फिर उसमें पहले जैसा भाव नहीं रहता। मन में दरार आ जाती है। जिस प्रकार सामान्य धागा टूटने पर उसे जब जोड़ते हैं तो उसमें गाँठ पड़ जाती है। इसी प्रकार प्रेम का धागा भी टूटने पर पहले के समान नहीं हो पाता।

(ख) हमें अपना दु:ख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?

ज. हमें अपना दु:ख दूसरों के सामने नहीं करना प्रकट चाहिए, क्योंकि दूसरा उसका मजाक उड़ाता है। हमें अपना दु:ख अपने मन में ही रखना चाहिए। अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार परिहास पूर्ण हो जाता है।

(ग) रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?

ज. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य इसलिए कहा है क्योंकि सागर का जल खारा होता है, वह किसी की प्यास नहीं बुझा सकता जबकि पंक जल धन्य है जिसे पीकर छोटे-छोटे जीवों की प्यास तृप्त हो जाती है इसलिए कवि ने ऐसा कहा है।

(घ) एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?

ज. एक पर अटूट विश्वास करके उसकी सेवा करने से सब कार्य सफल हो जाते हैं तथा इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता। एक को साधने से सब कार्य उसी प्रकार सिद्ध हो जाते हैं जिस प्रकार जड़ को सींचने से फल, फूल आदि मिलते हैं। उसी प्रकार परमात्मा को साधने से अन्य सब कार्य कुशलतापूर्वक संपन्न हो जाते हैं।

(ङ) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?

ज. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य इसलिए नहीं कर पाता क्योंकि जल से ही कमल की प्यास बुझती है, वह खिलता है और जीवन पाता है। कमल की संपत्ति जल है। अपनी संपत्ति नष्ट होने पर दूसरा व्यक्ति साथ | नहीं दे सकता।

(च) अवध नरेश को चित्र कूट क्यों जाना पड़ा?

ज. अवध नरेश श्री रामचंद्र अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए जब चौदह वर्ष वनवास र थे तब वे चित्रकूट जैसे रमणीय वन में रुके थे। कवि विपदा पड़ने पर ईश्वर की शरण में जाने की बात कह रहे हैं क्योंकि मुसीबत में वन भी राजभवन दिखाई देता है।

(छ) 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?

ज. नट कुंडली को समेटकर झट से ऊपर चढ़े जाने की कला में सिद्धहस्त होता है।

(ज) 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

ज. जिस प्रकार मोती का पानी उतर जाता है। अर्थात् उसकी चमक समाप्त हो जाती है तो पका कोई महत्त्व नहीं रह जाता। मनुष्य का पानी उतरने से आशय मनुष्य का मान-सम्मान समाप्त हो जाता है। चून' पानी से ही गुँथा जाता है। सूखा आटा पानी के बिना किसी का पेट भरने में सहायक नहीं। इस प्रकार मोती, मनुष्य और चून के लिए पानी का अपना विशेष महत्त्व है।

2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए

(क) टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

ज. प्रेम ऐसे धागे के समान है, जो टूटने पर फिर नहीं मिलता। यदि वह मिल भी जाए तो उसमें गाँठ अवश्य पड़ जाती है। आशय यह है कि प्रेम भाव नष्ट हो जाए तो फिर प्रयास करने पर भी संबंध मधुर नहीं हो पाते।

(ख) सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

ज. लोग दूसरों के कष्ट सुनकर प्रसन्न ही होते हैं। वे कष्टों को बाँटने को तैयार नहीं होते।

(ग) रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।

ज. रहीम कहते हैं कि यदि जड़ को ही सींचा जाए तो फल-फूल अपने आप खिल उठते हैं। उसी भाँति यदि मनुष्य परमात्मा का ध्यान कर लें तो सांसारिक सुख अपने-आप प्राप्त हो जाते हैं।

(घ) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।

ज. दोहा ऐसा छंद है जिसमें अक्षर तो बहुत कम होते हैं किंतु उनका अर्थ बहुत गहरा और व्यापक होता है।

(ङ) नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।

ज. रीझने पर हिरण अपने प्राण तक दे देता है और मनुष्य प्रेम सहित धन का दान कर देता है। आशय यह है कि प्रसन्न मनोदशा में मनुष्य उदार हो जाता है।

(च) जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।

ज. हर वस्तु का स्थान और महत्त्व अपनी जगह है। बड़ी वस्तु अपनी जगह काम आती है और छोटी वस्तु अपनी जगह। जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार कुछ नहीं कर सकती। आशय यह है कि छोटी वस्तुओं का स्थान भी बड़ी वस्तुओं से कम नहीं है। इसी प्रकार छोटे लोगों का स्थान बड़े लोगों से किसी प्रकार भी कम नहीं है।

(छ) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।

ज. पानी के बिना आटा काम नहीं आ सकता। चमक के बिना मोती बेकार है और आत्मसम्मान के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। आशय यह है कि जीवन में आत्मगौरव का बहुत महत्त्व है।

3. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है?

(क) जिस पर बिपदा पड़ती है वही इस देश में आता है।

ज. जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस।

(ख) कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।

ज. बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।

(ग) पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

ज. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।

4. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

उदाहरणः कोय – कोई, जे – जो ज्यों

ज्यों	–	जैसे	कछु	–	कुछ	नहिं	–	नहीं	कोय	–	कोई
धनि	–	धन्य	आखर	–	अक्षर	जिय	–	जीव	थोरे	–	थोड़े
होय	–	होता	माखन	–	मक्खन	तरवारि	–	तलवार	सींचिबो	–	सींचना
मूलहिं	–	मूल	पिअत	–	पीते ही	पिआसो	–	प्यासा	बिगरी	–	बिगड़ी
आवे	–	आए	सहाय	–	सहायक	ऊबरै	–	उबरे	बिनु	–	बिन
बिथा	–	व्यथा	अठिलैहैं	–	इठलाएँगे	परिजाय	–	पड़ जाए			

योग्यता-विस्तार

1. 'सुई की जगह तलवार काम नहीं आती' तथा 'बिन पानी सब सून' इन विषयों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

2. 'चित्रकूट' किस राज्य में स्थित है, जानकारी प्राप्त कीजिए।

ज : विद्यार्थी स्वयं करें।

परियोजना कार्य

• नीति संबंधी अन्य कवियों के दोहे/कविता एकत्र कीजिए और उन दोहों/कविताओं को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

ज : विद्यार्थी स्वयं करें।

8 गीत – अगीत

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

(क) नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

ज. नदी अपना विरह गीत किनारों को सुनाती हुई तेजी से भागी जा रही है। ऐसा लगता है कि वह सागर से मिलने को उतावली है। उसके इस कार्य-व्यवहार को देख नदी के किनारे खड़ा गुलाब सोचता है कि यदि भगवान उसे भी बोलने की शक्ति देते तो वह भी पतझड़ के सपनों का गीत संसार का सुनाता। इससे संबंधित पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

तट पर एक गुलाब सोचता,

"देते स्वर यदि मुझे विधाता,

अपने पतझर के सपनों का ।

मैं भी जग को गीत सुनाता।"

(ख) जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

ज. शुक अपना स्नेह प्रकट करने के लिए मधुर गीत गाता है तब उसका गीत पूरे वन में गूंज जाता है, शुकी के हृद्य पर यह प्रभाव पड़ता है कि उस गीत की लहरें उसके हृदय को छू जाती हैं और वह स्नेह में ओत-प्रोत होकर मौन रह जाती है। उसे अपने स्नेह को व्यक्त करने के लिए स्वर नहीं मिल पाता। शुक का गीत सुनकर शुकी के पंख खुशी से फूल जाते हैं। वह अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है।

(ग) प्रेमी जब गीत गाता है, तब प्रेमिका की क्या इच्छा होती है?

ज. जब प्रेमी प्रेम के गीत गाता है तब उसकी प्रेमिका घर छोड़कर उसके पास चली आती है। वह नीम की छाया में छिपकर उसका मधुर गीत सुनती है। तब उसकी यह इच्छा होती है कि वह भी उसके गीत की पंक्ति बन | जाए। वह उस पंक्ति में डूबकर खो जाती है और उसको गुनगुनाना शुरू कर देती है।

(घ) प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति-चित्रण को लिखिए।

ज. प्रकृति का चित्रण करते हुए कवि कहता है कि वन के सुनसान वातावरण में नदी तीव्र गति से बहती चली जा रही है। ऐसा लगता है कि वह अपनी व्यथा अपने किनारों से कह रही है और अपना दिल हल्का कर रही है। तट पर एक गुलाब का पौधा है जो किसी सोच-विचार में मग्न है।

(ङ) प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।

ज. प्रकृति की सुंदरता पशु-पक्षियों को भी गुनगुनाने तथा चहचहाने के लिए आकुल कर देती है। दोनों अर्थात् नर और मादा में प्रेम उमड़ने लगता है। उनके क्रिया-कलाप प्रकृति के सौंदर्य के प्रेम में विलीन हो जाते हैं।

(च) मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।

ज. मनुष्य को प्रकृति अनेक रूपों में आंदोलित करती है। उसका स्वच्छ वातावरण उसे प्रभावित करता है। प्रकृति | में सर्वत्र संगीत प्राप्त होता है। इसे सुनकर और अनुभव करके मनुष्य का मन आंदोलित+हो उठता है। संध्या के समये स्वाभाविक रूप से प्रेमी का मन आल्हा गाने के लिए ललचा उठता है। यह संध्या समय की ही मधुरता है जिसके कारण प्रेमी के हृदय में प्रेम उमड़ने लगता है।

(छ) सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए। **ज.** गीत और अगीत में थोड़ा-सा अंतर होता है। मन के भावों को प्रकट करने से गीत बनता है और उन्हें मन ही मन में गुनगुनाना अगीत है। यद्यपि अगीत का प्रकट में कोई अस्तित्व नहीं किंतु यह आवश्यक है। गीत-अगीत का संबंध मन में उठने वाले भावों से होता है। जब हृदय के भाव को स्वर मिल जाते हैं तो वह गीत बन जाता हैं और उन भावों को जब स्वर नहीं मिल पाता तो वे अगीत बन जाते हैं। अगीत को अभिव्यक्ति का अवसर नहीं मिलता पर इसके अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता।

(ज) 'गीत-अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए।

ज. "गीत-अगीत' कविता का केंद्रीय भाव यह है कि जिस भाव या विचार को स्वर के माध्यम से अभिव्यक्ति का अवसर मिल जाता है वह गीत है। परंतु इसके साथ अगीत के महत्त्व को भुलाया नहीं जाना चाहिए क्योंकि मन-ही-मन में भावों को अनुभव करना कम सुंदर नहीं होता। अगीत मन में उमड़-घुमड़ कर रह जाता है। इसकी गूंज सुनी तो नहीं जा सकती पर अनुभव की जा सकती है।

2. संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए-

(क) अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता

ज. प्रसंगः प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-1 में संकलित कविता 'गीत-अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी हैं।

व्याख्याः नदी के तट पर अकेला खड़ा गुलाब सोचता है कि उसके अंदर भी कोमल भावनाएँ हैं। यदि ईश्वर उसे वाणी देता तो वह संसार को अपने गीत के माध्यम से अपनी कथा सुना पाता। इस प्रकार उसका अगीत गीत बन जाता।

(ख) गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर

ज. प्रसंगः प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-1 में संकलित कविता 'गीत-अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी हैं।

व्याख्याः कवि इसमें शुक पर प्रकृति के प्रभाव को दर्शाते हुए कहता है मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी प्राकृतिक सौंदर्य से चहचहाने लगते हैं। जब सूर्य की प्रातः कालीन किरण शक के अंगों को छूती है तो वह मधुर स्वर से गाने लगता है, किंतु शुकी का स्वर स्नेह में ही भीगकर रह जाता है वह अपने भावों को गीत के माध्यम से व्यक्त नहीं कर पाती।

(ग) हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना यों मन में गुनती है।

ज. प्रसंगः प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-1 में संकलित कविता 'गीत-अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी हैं।

व्याख्याः मानवीय प्रेम की अभिव्यक्ति प्राकृतिक सौंदर्य का ही हिस्सा है। प्रेमी का गाया हुआ गीत प्रेमिका के हृदय तक पहुँच जाता है। तभी वह सोचती है कि हे ईश्वर! वह प्रेमी के गीत की कड़ी क्यों नहीं बनी। इस प्रकार वह मन-ही-मन सोचने लगती है। उसके शब्द गीत की ध्वनि को सुनकर वह खिंची चली आती है; पर वह गा नहीं पाती।

3. निम्नलिखित उदाहरण में 'वाक्य-विचलन' को समझने का प्रयास कीजिए। इसी आधार पर प्रचलित वाक्य-विन्यास लिखिए-

उदाहरणः तट पर एक गुलाब सोचता
एक गुलाब तट पर सोचता है।

(क) यदि विधाता मुझे स्वर देते।

(ख) शुक उस घनी डाल पर बैठा।

(ग) शुक का स्वर वन में गूंज रहा।

(घ) मैं गीत की कड़ी क्यों न हुई?

(ङ) शुकी बैठकर अंडे सेती है।

9. अग्नि पथ - हरिवंश राय बच्चन

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है?

ज- कवि ने 'अग्नि पथ' जीवन के कठिनाई भरे रास्ते के लिए प्रयुक्त किया है। कवि का मानना है कि जीवन में पग-पग पर संकट हैं, चुनौतियाँ हैं और कष्ट हैं। इस प्रकार यह जीवन संघर्षपूर्ण है।

(ख) 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

ज- "माँग मत', 'कर शपथ' तथा 'लथपथ' शब्दों का बार-बार प्रयोग करके कवि मनुष्य को कष्ट सहने के लिए तैयार करना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य आँसू, पसीने और खून से लथपथ' होने पर भी राहत और सुविधा न माँगे। वह कष्टों को रौंदता हुआ आगे बढ़ता जाए और संघर्ष करने की शपथ ले।

(ग) "एक पत्र-छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

ज- इस पंक्ति का आशय है-मनुष्य जीवन के कष्ट भरे रास्तों पर चलते हुए थोड़ा-सा भी आराम या सुविधा न माँगे। वह निरंतर कष्टों से जूझता रहे।

2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) तू न थमेगा कभी तू ने मुड़ेगा कभी

ज- इन पंक्तियों का भाव यह है कि हे मनुष्य! जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, पर तू उनसे हार मानकर कभी रुकेगा नहीं और संघर्ष से मुँह मोड़कर तू कभी वापस नहीं लौटेगा बस आगे ही बढ़ता जाएगा।

(ख) चल रहा मनुष्य है। अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, पथपथ

ज- कवि देखता है कि जीवन पथ में बहुत-सी कठिनाइयाँ होने के बाद भी मनुष्य उनसे हार माने बिना आगे बढ़ता जा रहा है। कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए वह आँसू, पसीने और खून से लथपथ है। मनुष्य निराश हुए बिना बढ़ता जा रहा है।

3. इस कविता को मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।

ज- इस कविता का मूलभाव है-निरंतर संघर्ष करते हुए जियो। कवि जीवन को आग-भरा पथ मानता है। इसमें पग-पग पर चुनौतियाँ और कष्ट हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह इन चुनौतियों से न घबराए। न ही इनसे मुँह मोड़े। बल्कि वह आँसू पीकर, पसीना बहाकर तथा खून से लथपथ होकर भी निरंतर संघर्ष करता रहे।

योग्यता-विस्तार

1. 'जीवन संघर्ष का ही नाम है' इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन कीजिए।

ज- छात्र स्वयं करें।

परियोजना कार्य

1. 'जीवन संघर्षमय है, इससे घबराकर थमना नहीं चाहिए' इससे संबंधित अन्य कवियों की कविताओं को एकत्र कर एक एलबम बनाइए।

ज- छात्र स्वयं करें।

अन्य पाठेतर हल (लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर)

1. कवि 'एक पत्र छाँह' भी माँगने से मना करता है, ऐसा क्यों?

ज- कवि एक पत्र छाँह भी माँगने से इसिलए मना करता है, क्योंकि संघर्षरत व्यक्ति को जब एक बार रास्ते में सुख मिलता है, तब उसका ध्यान संघर्ष के मार्ग से हट जाता है। ऐसा व्यक्ति संघर्ष से विमुख होकर सुखों का आदी बनकर रह जाता है।

2. कवि किस दृश्य को महान बता रहा है, और क्यों?

ज- जीवन पथ पर बहुत-सी परेशानियाँ और कठिनाइयाँ हैं, जो मनुष्य को आगे बढ़ने से रोकती हैं। मनुष्य इन कठिनाइयों से संघर्ष कर आगे बढ़ते जा रहे हैं। कवि को यह दृश्य महान लग रहा है। इसका कारण है कि संघर्ष करते लोग आँसू, पसीने और रक्त से तर हैं, फिर भी वे हार माने बिना आगे बढ़ते जा रहे हैं।

3. कवि मनुष्य से किस बात की शपथ लेने को कह रहा है?

ज- कवि जानता है कि जीवनपथ दुख और कठिनाइयों से भरा है। व्यक्ति इन कठिनाइयों से जूझते हुए थक जाता है। वह निराश होकर संघर्ष करना बंद कर देता है। अधिक निराश होने पर वह आगे बढ़ने का विचार त्यागकर वापस लौटना चाहता है। कवि संघर्ष करते लोगों से कभी न थकने, कभी न रुकने और कभी वापस न लौटने की शपथ को कह रहा है।

4. 'अग्नि पथ' कविता को आप अपने जीवन के लिए कितनी उपयोगी मानते हैं?

ज- मैं 'अग्नि पथ' कविता को जीवन के लिए बहुत जरूरी एवं उपयोगी मानता हूँ। इस कविता के माध्यम से हमें कठिनाइयों से घबराए बिना उनसे संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है। जीवन पथ पर निरंतर चलते हुए कभी न थकने, थककर निराश होकर न रुकने तथा निरंतर आगे बढ़ने की सीख मिलती है, जो सफलता के लिए बहुत ही आवश्यक है।

5. कवि मनुष्य से क्या अपेक्षा करता है? 'अग्नि पथ' कविता के आधार पर लिखिए।

ज- कवि मनुष्य से यह अपेक्षा करता है कि वह अपना लक्ष्य पाने के लिए सतत प्रयास करे और लक्ष्य पाए बिना रुकने का नाम न ले। लक्ष्य के पथ पर चलते हुए वह न थके और न रुके। इस पथ पर वह छाया या अन्य आरामदायी वस्तुओं की उपेक्षा करे तथा विघ्न-बाधाओं को देखकर साहस न खोए।

6. 'अग्नि पथ' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

ज- मानव को जीवन पथ पर चलते हुए अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। मनुष्य की राह में अनेक अवरोध उसका रास्ता रोकते हैं जिनसे संघर्ष करते हुए, अदम्य साहस बनाए रखते हुए मनुष्य को अपनी मंजिल की ओर बढ़ना पड़ता है। संघर्ष भरे इसी जीवन को अग्नि पथ कहा गया है।

7. 'अग्नि पथ' कविता में निहित संदेश अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

ज- अग्नि पथ कविता में निहित संदेश यह है कि मनुष्य को जीवन पथ पर निरंतर बढ़ते रहना चाहिए। इस जीवन पथ पर जहाँ भी विघ्न-बाधाएँ आती हैं, मनुष्य को उनसे हार नहीं माननी चाहिए। उसे थककर हार नहीं माननी चाहिए और लक्ष्य पाए बिना न रुकने की शपथ लेनी चाहिए।

8. जीवन पथ पर चलते मनुष्य के कदम यदि रुक जाते है तो उसे क्या हानि हानि उठानी पड़ती है?

ज- जीवन पथ पर चलता मनुष्य यदि राह की कठिनाइयों के सामने समर्पण कर देता है या थोड़ी-सी छाया देखकर आराम करने लगता है और लक्ष्य के प्रति उदासीन हो जाता है तो मनुष्य सफलता से वंचित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की जीवन यात्रा अधूरी रह जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. अग्नि पथ' कविता थके-हारे निराश मन को उत्साह एवं प्रेरणा से भर देती है। स्पष्ट कीजिए।

ज- मनुष्य का जीवन संघर्षों से भरा है। उसके जीवन पथ को कठिनाइयाँ एवं विघ्न-बाधाएँ और भी कठिन बना देते हैं। मनुष्य इनसे संघर्ष करते-करते थककर निराश हो जाता है। ऐसे थके-हारे और निराश मन को प्रेरणा और नई ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह कविता मनुष्य को संघर्ष करने की प्रेरणा ही नहीं देती है, वरन् जीवन पथ में मिलने वाली छाया देखकर न रुकने, सुख की कामना न करने तथा कठिनाइयों से हार न मानने का संदेश देती है। इसके अलावा इस कविता से हमें पसीने से लथपथ होने पर भी बढ़ते जाने के लिए प्रेरणा मिलती है। इससे स्पष्ट है कि अग्नि पथ कविता थके-हारे मन को उत्साह एवं प्रेरणा से भर देती है।

2. एक पत्र छाँह भी माँग मत' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

ज- 'एक पत्र छाँह' अर्थात् एक पत्ते की छाया जीवन पथ पर संघर्षपूर्वक बढ़ रहे व्यक्ति के पथ में आने वाले कुछ सुखमय पल है। इनका सहारा पाकर मनुष्य कुछ देर और आराम करने का मन बना लेता है। इससे वह गतिहीन हो जाता है। यह गतिहीनता उसकी सफलता प्राप्ति के लिए बाधक सिद्ध हो जाती है। इस गतिहीन अवस्था से उठकर पसीने से लथपथ होकर संघर्ष करना, कठिनाइयों से जूझना कठिन हो जाता है। इससे व्यक्ति सफलता से दूर होता जाता है। इसलिए कवि एक पत्र छाँह भी माँगने से मना करता है।

10. नए इलाके में ... / खुशबू रचते हैं हाथ

नए इलाके में :-

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-
(क) नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?
(ज) कवि नए बसते इलाकों में रास्ता इसलिए भूल जाता है क्योंकि यहाँ नित नया निर्माण होता रहता है। नित नई घटनाएँ घटती रहती हैं। अपने ठिकाने पर जाने के लिए जो निशानियाँ बनाई गई होती हैं, वे जल्दी ही मिट जाती हैं। पीपल का पेड़ हो या ढहा हुआ मकान या खाली प्लाट, सबमें शीघ्र ही परिवर्तन हो जाता है। इसलिए वह प्रायः रास्ता भूल जाता है।
(ख) कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?
(ज) कविता में निम्नलिखित पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है ... 1.पीपल का पेड़, 2.ढहा हुआ घर, 3.जमीन का खाली टुकड़ा और 4.बिना रंग वाले लोहे के फाटक वाला इकमंजिला मकान।
(ग) कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?
(ज) कवि अपने निर्धारित घर से एक घर पीछे यो आगे इसलिए चल देता है क्योंकि उसे घर तृक पहुँचाने वाली निशानियाँ मिट चुकी हैं। उसने एक इकमंजिले मकान की निशानी बना रखी थी जिस पर बिना रंग वाला लोहे का फाटक था। परंतु अब न वह फाटक रहा न वह मकान इकमंजिला रहा। इसलिए वह अपने निश्चित लक्ष्य को ढूँढता-ढूंढता आगे या पीछे चला गया।
(घ) 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?
(ज) "वसंत का गया पतझड़ को लौटा' का अभिप्राय है-एकाएक परिवर्तन हो जाना। आने और जाने के समय में ही परिवर्तन हो जाना।
'बैसाख का गया भादों को लौटा' का अभिप्राय है-कुछ ही समय में एकाएक परिवर्तन हो जाना। जाने के समय और लौटने के समय में ही अद्‌भुत परिवर्तन हो जाना।
(ङ) कवि ने इस कविता में 'समय की कमी की ओर क्यों इशारा किया है?
(ज) इस कविता में कवि ने समय की कमी की ओर इशारा किया है। लोग हरदम कुछ-न-कुछ करने, बनाने और रचने की जुगाड़ में लगे रहते हैं। इस अंधी प्रगति में उनकी पहचान खो गई है। वे स्वयं को भूल गए हैं। इसके कारण उनके भीतर एक डर समा गया है कि कहीं वे अकेले तो नहीं रह गए हैं। क्या कोई उन्हें पहचानने वाला मिल जाएगा या नहीं। लोगों के पास इतनी फुरसत नहीं है कि वे इस अंधे निर्माण से समय निकालकर एक-दूसरे के साथ आत्मीयता जोड़ सकें।

(च) इस कविता में कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?

(ज) इस कविता में कवि ने शहरों की निरंतर गतिशीलता, कर्मप्रियता और निर्माण की अंधी दौड़ के कारण खोती आत्मीयता का चित्रण किया है। शहरों में नई-नई बस्तियाँ, नए-नए निर्माण तो रोज हो रहे हैं किंतु उनकी पहचान और आत्मीयता नष्ट हो रही है।

2. व्याख्या कीजिए-

(क) यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया

व्याख्या- आज दुनिया में इतनी तीव्र गति से बदलाव हो रहा है कि साल भर का बदलाव एक दिन में हो जाता है। इस बदलाव को देखकर अपनी जानी-पहचानी वस्तुएँ भूलने का भ्रम होने लगता है। यहाँ तक कि सुबह का गया शाम को लौटने पर वह अपना मकान न ढूंढ़ पाने पर लगता है कि एक ही दिन में पुरानी पड़ गई है, क्योंकि कल तक तो कुछ न कुछ फिर नया बन जाएगा।

(ख) समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर

व्याख्या- कवि कहता है कि तेजी से बदलती दुनिया और उसके साथ तालमेल बिठाने के क्रम में लोगों के पास समय बहुत कम बचा है। कवि देखता है कि आकाश में काले बादल छाये चले आ रहे हैं। वर्षा की पूरी संभावना है। ऐसे में लोग छतों पर आएँगे। अब उनमें से कोई कवि को पहचानकर पुकार लेगा कि आ जाओ, तुम्हारा घर यहीं है, जिसे तुम खोज नहीं पा रहे हो।

योग्यता-विस्तार

1. पाठ में हिंदी महीनों के कुछ नाम आए हैं। आप सभी हिंदी महीनों के नाम क्रम से लिखिए-

ज- चैत्र,बैसाख,ज्येष्ठ,आषाढ़,श्रावण,भाद्रपद,आश्विन,कार्तिक,मार्गशीर्ष,पौष,माघ,फाल्गुन।

खुशबू रचते हैं हाथ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) 'खुशबू रचने वाले हाथ' कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ-कहाँ रहते हैं?

ज- 'खुशबू रचने वाले हाथ' घोर गरीबी, अभावग्रस्त और अमानवीय परिस्थितियों में गंदे नाले के किनारे कूड़े-करकट के ढेर के पास छोटी-छोटी बस्तियों की तंग और गंदी गलियों में रहते हैं। वहाँ की बदबू से लगता है कि नाक फट जाएगी।

(ख) कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?

ज- कविता में कई प्रकार के हाथों की चर्चा की गई है.....-

उभरी नसों वाले हाथ अर्थात् वृद्ध मजदूरों के हाथ।

घिसे नाखूनों वाले हाथ अर्थात् मजदूर वर्ग के हाथ।

पीपल के नए पत्ते जैसे हाथ अर्थात् कम उम्र के बच्चों के हाथ।

जूही की डाल जैसे हाथ अर्थात् नवयुवतियों के सुंदर हाथ।

कटे-पिटे और जख्मी हाथ अर्थात् मालिक द्वारा शोषित एवं सताए मजदूरों के हाथ।

(ग) कवि ने यह क्यों कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'?

ज- 'खुशबू रचते हैं हाथ' ऐसा कवि ने इसलिए कहा है जिन हाथों द्वारा दुनिया भर में खुशबू फैलाई जाती है, वे हाथ गंदे हैं, गंदी जगहों पर रहते हैं और अभावग्रस्त जीवन जीने को विवश हैं।

(घ) जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

ज- जहाँ अगरबत्तियाँ बनती है वहाँ का वातावरण अत्यंत गंदा होता है। गंदे नाले से उठती बदबू, चारों ओर कूड़े के ढेर से उठती बदबू से दुर्गंध फैली होती है। इस बदबू से ऐसा लगता है जैसे नाक फट जाएगी।

(ङ) इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

ज- इस कविता को लिखने है का उद्देश्य है-समाज के मजदूर वर्ग और अन्य लोगों के बीच घोर विषमता का चित्रण तथा दुनिया भर में अपनी बनाई अगरबत्तियों के माध्यम से सुगंध फैलाने वाले मजदूर वर्ग का घोर गरीबी में गंदगी के बीच जीवन बिताना तथा समाज द्वारा उनकी उपेक्षा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कराना।

2. व्याख्या कीजिए-

(क) (i) पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ

जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ

ज- कवि अगरबत्तियाँ बनाने वाले मजदूरों के बारे में बताता है कि इस उद्योग में पीपल के नए पत्ते जैसे सुकोमल हाथ वाले लड़कों तथा जूही की डाल जैसे नव युवतियों के सुंदर हाथों को भी काम करना पड़ रहा है। अर्थात् बाल श्रमिक भी कार्यरत हैं।

(ii) दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ

ज- कवि ने इन पंक्तियों में खुशबू बनाने वाले मजदूरों के बारे में बताया है कि ये मजदूरों को दुनिया की सारी गंदगी के बीच रहने को विवश हैं। ऐसे गंदे स्थानों पर रहकर वे सारी दुनिया में सुगंध बिखेरते हैं। ये मज़दूर गंदी जगहों पर रहकर गंदे हाथों से काम करके दुनिया को खुशी और सुगंध बाँट रहे हैं।

(ख) कवि ने इस कविता में 'बहुवचन' का प्रयोग अधिक किया है? इसका क्या कारण है?

ज- इस कविता में कवि ने बहुवचन का प्रयोग इसलिए किया है, क्योंकि ऐसे उद्योगों में काम करना किसी एक जगह की नहीं बल्कि अनेक देशों की समस्या है और इनमें बहुत-से मज़दूर काम करने को विवश हैं।

(ग) कवि ने हाथों के लिए कौन-कौन से विशेषणों का प्रयोग किया है?

ज- कवि ने हाथों के लिए कई विशेषणों का प्रयोग किया है; जैसे-
उभरी नसों वाले...घिसे नाखूनों वाले...पीपल के पत्ते से नए-नए...जूही की डाल जैसे खुशबूदार...गंदे कटे-पिटे...ज़ख्म से फटे हुए।

योग्यता-विस्तार

1. अगरबत्ती बनाना, माचिस बनाना, मोमबत्ती बनाना, लिफ़ाफ़े बनाना, पापड़ बनाना, मसाले कूटना आदि लघु उद्योगों के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।

ज- छात्र स्वयं करें।

अन्य पाठेतर हल (नए इलाके में..)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कवि को पुराने निशान धोखा क्यों दे जाते हैं?

ज- कवि को पुराने निशान इसलिए धोखा दे जाते हैं, क्योंकि कवि जहाँ रहता है वहाँ तेज़ गति से बदलाव हो रहा है। नित नए मकान बनते जा रहे हैं। खाली ज़मीन, गिरे मकान, जिन्हें वह सवेरे आते हुए देखते हैं, शाम तक वहाँ कुछ नया बन जाने से वे निशान नहीं मिल पाते हैं।

2. कवि अपने घर तक पहुँचने के लिए क्या-क्या सोचता है?

ज- कवि अपने घर तक पहुँचने के लिए सोचता है कि पीपल का पेड़ और गिरा घर मिल जाने के बाद जमीन के खाली टुकड़े से बाएँ मुड़ने पर जब वह दो मकान बाद जाएगा तो उसे अपना बिना रंग वाला लोहे के फाटक का एक मंजिला मकान मिल जाएगा।

3.कवि ठकमकाता हुआ क्यों चलता है?

ज- कवि ठकमकाता हुआ इसलिए चलता है क्योंकि जिस इलाके में रहता है, वहाँ खूब सारे नए मकान बनते जा रहे हैं, इस कारण वह अपना घर नहीं ढूंढ पा रहा है। अपना मकान पहचानने के लिए ही वह ठकमकाता हुआ चल रहा है।

4. अंत में कवि को अपना घर ढूँढ़ने का क्या उपाय नज़र आता है?

ज- अंत में कवि को अपना मकान ढूँढ़ने का यह उपाय नज़र आता है कि वह हर घर के दरवाजे को खटखटाकर पूछे कि क्या यह वही मकान है जहाँ से मैं सवेरे निकल कर गया था।

5. 'ढहा आ रहा अकास' का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि इससे कवि को क्या लाभ हो सकता है?

ज- 'ढहा आ रहा अकास' का आशय है-आसमान में काले-काले बादल घिरते आ रहे हैं। इससे भीषण तेज़ वर्षा हो सकती है। वर्षा का अनुमान कर लोग अपनी छतों पर आएँगे। वे कवि को देखेंगे और कहेंगे कि आ जाओ। तुम्हारा घर यहीं तो है। इससे कवि अपने घर पहुँच जाएगा।

6. 'नए इलाके में' कवि के आधार पर उस इलाके की विशेषताएँ बताइए, जहाँ कवि रहता है।

ज- जिस इलाके में कवि रहता है वहाँ नित नए निर्माण किए जा रहे हैं। इससे वहाँ के आस-पास अत्यंत तेज़ी से बदलाव आता जा रहा है। इससे एक-दो दिन बाद ही सब कुछ बदला-बदला-सा नज़र आने लगता है।

7. 'नए इलाके में कविता का उद्देश्य क्या है?

ज- 'नए इलाके में कविता का उद्देश्य है-दुनिया में तेजी से आते बदलाव की ओर संकेत करना, जिसके कारण एक-दो दिन में चारों ओर इतना बदलाव आ जाता है कि पहचान पाना कठिन हो जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'नए इलाके में' कविता में कवि को किस समस्या से दो-चार होना पड़ रहा है और क्यों?

ज- 'नए इलाके में कवि को अपना ही घर ढूँढ़ने की समस्या से दो-चार होना पड़ रहा है। इसका कारण यह है कि कवि जहाँ रहता है, वहाँ सब कुछ इतनी तेज़ी से बदल रहा है कि पुराने चिह्न लुप्त होते जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि स्मृतियाँ साथ नहीं दे रही हैं। इससे कवि अपना मकान ही नहीं ढूंढ पा रहा है।

2. 'नए इलाके में' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

ज- 'नए इलाके में कविता में उस दुनिया का उल्लेख हुआ है जहाँ इतनी तेजी से बदलाव हो रहा है कि एक दिन में सब कुछ पुराना पड़ता जा रहा है। उस बदलाव के माध्यम से इस ओर भी संकेत किया गया है कि इस जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है। यहाँ स्मृतियों के भरोसे जीना कठिन है। इसलिए पुरानी रीतियों रूढ़ियों को छोड़कर नए परिवर्तन अपनाने को तैयार रहना चाहिए। ऐसा न करने वाला जीवन में पिछड़ जाएगा।

(खुशबू रचते हैं हाथ)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'कूड़े-करकट के ढेरों के बाद' शब्दों से खुशबू रचने वालों के परिवेश के बारे में क्या पता चलता है?

ज- 'कूड़े-करकट के ढेरों के बाद' शब्दों से खुशबू रचने वालों के परिवेश के बारे में यह पता चलता है कि वे बहुत ही गंदे स्थानों पर रहते हैं।

2. 'जख्म से फटे हाथ' मजदूरों की किस दशा की ओर संकेत करते हैं?

ज- 'जख्म से फटे हाथ' मजदूरों की गरीबी और अभावग्रस्तता की ओर संकेत करते हैं। ये मज़दूर इतने गरीब हैं कि इन ज़ख्मो के इलाज के लिए उनके पास पैसे नहीं हैं, और वे मजदूरी न मिलने के डर से इलाज करवाने नहीं जा रहे हैं।

3. खुशबू की रचना करने वाले लोग किस उम्र के है? इसके बारे में तुम्हें कैसे पता चलता है?

ज- खुशबू की रचना करने वालों में बच्चे-बूढे अर्थात् हर उम्र के स्त्री-पुरुष और लड़के-लड़कियाँ शामिल हैं। इसका पता हमें उभरी नसों वाले, पीपल के पत्ते से नए-नए और जूही की डाल से खुशबूदार हाथों को देखकर लगता है।

4. 'खुशबू रचते हैं हाथ' में कौन-सी समस्या समाज के लिए घातक है?

ज- किसी भी समाज, देश के बच्चे ही उसका भविष्य होते हैं। इन बच्चों के बाल मजदूर के रूप में काम करने से वे पढ़ लिख नहीं सकेंगे। उनके खेलने-कूदने के दिन मजदूरी करने में बीत रहे हैं। ऐसे में ये बच्चे आजीवन मजदूर बनकर रह जाएँगे। बाल मजदूरी की यह समस्या समाज और राष्ट्र के लिए घातक है।

5. खुशबू रचने वाले हाथों के प्रति समाज के धनी वर्ग का क्या कर्तव्य है?

ज- खुशबू रचने वाले हाथ प्रायः बाल मजदूर होते हैं, जो शहर की गंदी बस्तियों एवं बदबूदार स्थानों पर रहते हैं। इन बाल मजदूरों के प्रति के प्रति समाज के धनी वर्ग का कर्तव्य यह है कि वे इन बाल मजदूरों के प्रति संवेदनशील बनकर उनकी शिक्षा और उत्थान के लिए आगे आएँ।

6. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में किस समस्या की ओर ध्यानाकर्षित किया गया है?

ज- 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में बाल श्रम और श्रमिक जीवन की समस्या को उभारते हुए समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। अगरबत्तियों और धूप (खुशबूदार पदार्थ) से मंदिरों और घरों को महकाने वाले लोग बदबूदार जगहों पर रहने के लिए विवश हैं। इन बाल श्रमिकों के जीवन को उन्नत बनाने की आशा में इस समस्या की ओर ध्यान खींचा गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. अगरबत्तियाँ बनाने वाले बाल मज़दूरों के जीवन में सुधार लाने हेतु कुछ सुझाव दीजिए।

ज- खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाने वाले बाल मजदूरों के जीवन में सुधार लाने का सबसे अच्छा उपाय है, उनके हाथों में पुस्तकें पकड़ाना और उन्हें विद्यालय की ओर ले जाना। इससे ये बाल मजदूर पढ़-लिखकर कार्य कुशल बन जाएँगे। इनके लिए पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न कामों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि ये बाल श्रमिक कुशल कारीगर बनकर स्वरोजगार कर सकें और मज़दूर बनकर जीवन बिताने के लिए विवश न हों। इससे इस वर्ग के बच्चों का जीवन स्तर ऊँचा उठ जाएगा।

2. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता देश में व्याप्त किस विषमता की ओर संकेत करती है? इसका सामाजिक विकास पर क्या असर पड़ता है?

ज- 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता देश में व्याप्त में आर्थिक विषमता की ओर संकेत करती है। इसके अलावा यह कविता समाज के वर्ग भेद पर भी चोट करती है। हमारे समाज में अमीर वर्ग द्वारा गरीबों एवं बच्चों का इस तरह शोषण किया जाता है कि गरीब वर्ग आजीवन इससे उबर नहीं पाता है। इससे गरीब एवं उसके बच्चों को काम करने पर भी रोटी, कपड़ी जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। इससे सामाजिक विकास का लक्ष्य कहीं बहुत पीछे छूट जाता है। इससे अमीर और गरीब के मध्य की खाई और भी गहरी होती चली जाती है।

संचयन
1. गिल्लू

1. सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?

ज- सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में यह विचार आया कि गिल्लू सोनजुही के पास ही मिट्टी में दबाया गया था। इसलिए अब वह मिट्टी में विलीन हो गया होगा और उसे चौंकाने के लिए सोनजुही के पीले फूल के रूप में फूट आया होगा।

2.पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?

ज- हिंदू संस्कृति में ऐसी मान्यता है कि पितृपक्ष में हमारे पूर्वज हमसे कुछ पाने के लिए कौए के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसके अलावा कौए हमारे दूरस्थ रिश्तेदारों के आगमन की सूचना भी देते हैं, जिससे उसे आदर मिलता है। दूसरी ओर कौए की कर्कश भरी काँव-काँव को हम अवमानना के रूप में प्रयुक्त करते हैं। इससे वह तिरस्कार का पात्र बनता है। इस प्रकार एक साथ आदर और अनादर पाने के कारण कौए को समादरित और अनादरित कहा गया है।

3.गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

ज- महादेवी वर्मा ने गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार बड़े ध्यान से ममतापूर्वक किया। पहले उसे कमरे में लाया गया। उसका खून पोंछकर घावों पर पेंसिलिन लगाई गई। उसे रुई की बत्ती से दूध पिलाने की कोशिश की गई। परंतु दूध की बूंदें मुँह के बाहर ही लुढ़क गईं। कुछ समय बाद मुँह में पानी टपकाया गया। इस प्रकार उसका बहुत कोमलतापूर्वक उपचार किया गया।

4. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

ज- लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू-

- उसके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और उसी तेज़ी से उतरता था। वह ऐसा तब तक करता था, जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठ जाती।
- भूख लगने पर वह चिक-चिक की आवाज़ करके लेखिका का ध्यान खींचता था।

5. गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?

ज- महादेवी ने देखा कि गिल्लू अपने हिसाब से जवान हो गया था। उसका पहला वसंत आ चुका था। खिड़की के बाहर कुछ गिलहरियाँ भी आकर चिकचिक करने लगी थीं। गिल्लू उनकी तरफ प्यार से देखता रहता था। इसलिए महादेवी ने समझ लिया कि अब उसे गिलहरियों के बीच स्वच्छंद विहार के लिए छोड़ देना चाहिए।

लेखिका ने गिल्लू की जाली की एक कील इस तरह उखाड़ दी कि उसके आने-जाने का रास्ता बन गया। अब वह जाली के बाहर अपनी इच्छा से आ-जा सकता था।

6. गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?

ज- लेखिका एक मोटर दुर्घटना में आहत हो गई थी। अस्वस्थता की दशा में उसे कुछ समय बिस्तर पर रहना पड़ा था। लेखिका की ऐसी हालत देख गिल्लू परिचारिका की तरह उसके सिरहाने तकिए पर बैठा रहता और अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके (लेखिका के) सिर और बालों को इस तरह सहलाता मानो वह कोई परिचारिका हो।

7. गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?

ज- गिल्लू की निम्नलिखित चेष्टाओं से महादेवी को लगा कि अब उसका अंत समीप है-

- उसने दिनभर कुछ भी नहीं खाया।
- वह रात को अपना झूला छोड़कर महादेवी के बिस्तर पर आ गया और उनकी उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया।

8. 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया'का आशय स्पष्ट कीजिए।

ज- आशय यह है गिल्लू का अंत समय निकट आ गया था। उसके पंजे ठंडे हो गए थे। उसने लेखिका की अँगुली पकड़ रखा था। उसने उष्णता देने के लिए हीटर जलाया। रात तो जैसे-तैसे बीती परंतु सवेरा होते ही गिल्लू के जीवन का अंत हो गया।

9. सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिको के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

ज- सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनी थी। इससे लेखिका के मन में यह विश्वास जम गया कि एक-न-एक दिन यह गिल्लू इसी सोनजुही की बेल पर पीले चटक फूल के रूप में जन्म ले लेगा।

अन्य पाठेतर हल

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखिका को अकस्मात किस छोटे जीव का स्मरण हो आया और कैसे?

ज- लेखिका ने देखा कि सोनजुही में पीली कली आ गई है। यह देखकर उसे अकस्मात छोटे जीव गिल्लू का स्मरण हो आया। सोनजुही की इसी सघन हरियाली में गिल्लू छिपकर बैठता था जो अचानक लेखिका के कंधे पर कूदकर उसे चौंका देता था। लेखिका को लगा कि पीली कली के रूप में गिल्लू ही प्रकट हो गया है।

2. कौए की काँव-काँव के बाद भी मनुष्य उसे कब आदर देता है और क्यों?

ज- कौए की काँव-काँव के बाद भी मनुष्य उसे पितृपक्ष में आदर देता है, क्योंकि हमारे समाज में ऐसी मान्यता है कि हमारे पुरखे हमसे कुछ पाने के लिए पितृपक्ष में कौओं के रूप में आते हैं। इसके अलावा कौआ हमारे किसी दूरस्थ के आने का संदेश भी लेकर आता है।

3. कौए अपना सुलभ आहार कहाँ खोज रहे थे और कैसे?

ज- लेखिका ने देखा कि गमले और दीवार की संधि में गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवत: घोंसले से गिर पड़ा होगा। कौए उसे उठाने के प्रयास में चोंच मार रहे थे। इसी छोटे बच्चे में कौए अपना सुलभ आहार खोज रहे थे।

4. लेखिका की अनुपस्थिति में गिल्लू प्रकृति के सान्निध्य में अपना जीवन किस प्रकार बिताता था?

ज - लेखिका की अनुपस्थिति में गिल्लू खिड़की में बनी जाली को उठाने से बने रास्ते द्वारा बाहर चला जाता था। वह दूसरी गिलहरियों के झुंड में शामिल होकर उनका नेता बन जाता और हर डाल पर उछल-कूद करता रहता था। वह लेखिका के लौटने के समय कमरे में वापस आ जाता था।

5. गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था? इसे न पाने पर वह क्या करता था?

ज- गिल्लू का प्रिय खाद्य काजू था। इसे वह अपने दाँतों से पकड़कर कुतर-कुतरकर खाता रहता था। गिल्लू को जब काजू नहीं मिलता था तो वह खाने की अन्य चीजें लेना बंद कर देता था या उन्हें झूले से नीचे फेंक देता था।

6. लेखिका ने कैसे जाना कि गिल्लू उसकी अनुपस्थिति में दुखी था?

ज- लेखिका एक मोटर दुर्घटना में घायल हो गई। इससे उसे कुछ समय अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब लेखिका के कमरे का दरवाजा खोला जाता तो गिल्लू झूले से नीचे आता परंतु किसी और को देखकर तेजी से भागकर झुले में चला जाता। सब उसे वहीं काजू दे आते, परंतु जब लेखिका ने अस्पताल से आकर झूले की सफ़ाई की तो उसे झूले में काजू मिले जिन्हें गिल्लू ने नहीं खाया था। इससे लेखिका ने जान लिया कि उसकी अनुपस्थिति में गिल्लू दुखी थी।

7. भोजन के संबंध में लेखिका को अन्य पालतू जानवरों और गिल्लू में क्या अंतर नज़र आया?

ज- लेखिका ने अनेक पशु-पक्षी पाल रखे थे, जिनसे वह बहुत लगाव रखती थी परंतु भोजन के संबंध में लेखिका को अन्य पालतू जानवरों और गिल्लू में यह अंतर नज़र आया कि उनमें से अिकसी जानवर ने लेखिका के साथ उसकी थाली में खाने की हिम्मत नहीं कि जबकि गिल्लू खाने के समय मेज़ पर आ जाता और लेखिका की थाली में बैठकर खाने का प्रयास करता।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखिका ने लघु जीव की जान किस तरह बचाई? उसके इस कार्य से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

ज- लेखिका ने देखा कि गमले और दीवार की संधि के बीच एक छोटा-सा गिलहरी का बच्चा पड़ा है। शायद यह घोंसले से गिर गया होगा। इसे कौए अपना भोजन बनाने के लिए तत्पर थे कि लेखिका की दृष्टि उस पर पड़ गई। उसने उस बच्चे को उठाकर उसके घावों पर पेंसिलीन लगाई और पानी पिलाया। इससे वह दो-तीन दिन में स्वस्थ हो गया। लेखिका के इस कार्य में हमें-

- जीव जंतुओं के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा मिलती है।
- जीव-जंतुओं की रक्षा करने की सीख मिलती है।
- जीव-जंतुओं को न सताने तथा उन्हें प्रताड़ित न करने की प्रेरणा मिलती है।

2. लेखिका को जीव-जंतुओं की संवेदनाओं की सूक्ष्म समझ थी। इसे स्पष्ट करते हुए बताइए कि आपको इनसे किन किन मूल्यों को अपनाने की सीख मिलती है?

ज- लेखिका अत्यंत सदय, संवेदनशील तथा परदुखकोतर थी। उससे मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों का दुख भी नहीं देखा जाता था। इसके अलावा उसे जीव-जंतुओं की भावनाओं की सूक्ष्म समझ थी। लेखिका ने देखा कि वसंत ऋतु में गिल्लू अन्य गिलहरियों की चिक-चिक सुनकर उन्हें अपनेपन के भाव से खिड़की में से निहारता रहता है। लेखिका ने तुरंत कीलें हटवाकर खिड़की की जाली से रास्ता बनवा दिया, जिसके माध्यम से वह बाहर जाकर अन्य गिलहरियों के साथ उछल-कूद करने लगा। इससे हमें जीव-जंतुओं की भावनाएँ समझने, उनके प्रति दयालुता दिखाने तथा जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में पहुँचाने की प्रेरणा मिलती है।

2. स्मृति

1. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

ज: भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में पिटाई की आशंका थी। वह पिटाई और उसके संभावित कारणों के बारे में सोच रहा था कि कहीं इस कड़ी सरदी में झरबेरी के बेर खाने चले आने के कारण बड़े भाई उसे पिटाई करने के लिए तो नहीं बुला रहे हैं।

2. मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

ज: मक्खनपुर पढ़ने जानेवाले बच्चों की टोली पूरी वानर टोली थी। उन बच्चों को पता था कि कुएँ में साँप है। वे ढेला फेंककर कुएँ में से आनेवाली उसकी क्रोधपूर्ण फुफकार सुनने में मजा लेते थे। कुएँ में ढेला फेंककर उसकी आवाज़ सुनने के बाद अपनी बोली की प्रतिध्वनि सुनने की लालसा उनके मन में रहती थी।

3. 'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'-यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

ज. साँप की फुफकार होने या उसे ढेला लगने या न लगने की बात लेखक को अब तक याद नहीं, क्योंकि कुएँ में ढेला मारते समय उसकी टोपी में रखी चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं। चिठियों को यूँ गिरते देखकर लेखक अपनी भावी पिटाई को सोचकर भयभीत हो गया। उक्त कथन लेखक की भयाक्रांत, निराश और घबराहट भरी मनोदशा को स्पष्ट करता है।

4. किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?

ज: लेखक को चिठियाँ बडे भाई ने दी थीं। यदि वे डाकखाने में नहीं डाली जातीं तो घर पर मार पडती। सच बोलकर पिटने का भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा वह बैठा सिसक रहा था। वह झूठ भी नहीं बोल सकता था। चिट्ठियाँ कुएँ में गिरी पड़ी थीं। उसका मन कहीं भाग जाने को करता था, फिर पिटने का भय और जिम्मेदारी की दुधारी तलवार कलेजे पर फिर रही थी। उसे चिट्ठियाँ बाहर निकालकर लानी थीं। अंत में उसने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय कर ही लिया।

5. साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाई?

ज: साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने कुएँ की दीवार पर अपना पैर लगाकर कुछ मिट्टी गिराई। इससे साँप का ध्यान बँट गया और उसने मिट्टी पर जोर से मुँह मारा। लेखक ने डंडे से चिट्ठियों को सरकाया, इससे उसका ध्यान डंडे की ओर चला गया और उसने डंडे पर भरपूर वार किया। इस तरह उसने साँप का ध्यान बँटाकर चिट्ठियाँ उठाने में सफल हो गया।

6. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए। **अथवा**

चिट्ठियों को कुएँ से निकालना मौत का सामना करना था। कैसे? स्पष्ट कीजिए।

ज: लेखक की चिट्ठियाँ कुएँ में गिरी पड़ी थीं। कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकाल लाना साहस का कार्य था। लेखक ने इस चुनौती को स्वीकार किया और उसने छह धोतियों को जोड़कर डंडा बाँधा और एक सिरे को कुएँ में डालकर उसके दूसरे सिरे को कुएँ के चारों ओर घुमाने के बाद उसमें गाँठ लगाकर छोटे भाई को पकड़ा दिया। धोती के सहारे जब वह कुएँ के धरातल से चार-पाँच गज ऊपर था, उसने साँप को फन फैलाए देखा। वह कुछ हाथ ऊपर लटक रहा था। साँप के पास पैर लटकते थे। वह आक्रमण करने की तैयारी में था।

साँप को धोती में लटककर नहीं मारा जा सकता था। डंडा चलाने के लिए काफी जगह चाहिए थी इसलिए उसने डंडा चलाने का इरादा छोड़ दिया। उसने डंडे से चिट्ठियों को खिसकाने का प्रयास किया कि साँप डंडे से चिपक गया। साँप का पिछला भाग लेखक के हाथों को छू गया। लेखक ने डंडे को एक ओर पटक दिया। देवी कृपा से साँप के आसन बदल गए और वह चिट्ठियों को उठाने में कामयाब हो गया।

7. इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है? **अथवा**
बच्चे किस प्रकार की शरारतों में आनंद लेते हैं?
ज: इस पाठ को पढ़ने के बाद अनेक बाल सुलभ शरारतों का पता चलता है; जैसे-

- बच्चे सरदी आदि की परवाह किए बिना पेड़ से फल आदि तोड़कर खाते रहते हैं।
- उन्हें पिटाई से डर लगता है।
- वे काम को जिम्मेदारी से करते हुए भी शरारतों में शामिल हो जाते हैं।
- जीव-जंतुओं को सताने में उन्हें मज़ा आता है।
- वे नासमझी में साँप जैसे जहरीले जीव से भी छेड़छाड़ करते हैं।

8. 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं'-का आशय स्पष्ट कीजिए।
ज: मनुष्य हर स्थिति से निबटने के लिए अपना अनुमान लगाता है। वह अपने अनुसार भविष्य के लिए योजनाएँ बनाता है, पर ये योजनाएँ हर बार सफल नहीं हो पातीं। ये कई बार झूठी सिद्ध होती हैं। कई बार तो स्थिति बिलकुल उल्टी होती है। जिस प्रकार लेखक के साथ बचपन में घटित हुआ। मक्खनपुर जाते समय जब लेखक की चिट्ठियाँ गिर गईं। उस समय की स्थिति का लेखक ने अनुमान नहीं लगाया था। कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को लाना साहस का काम था। लेखक धोती के सहारे कुएँ में उतरा था। सामने साँप फन फैलाए बैठा था। धोती पर लटककर साँप को मारना बिलकुल असंभव था।
वहाँ डंडा चलाने की भी जगह नहीं थी। लेखक ने डंडे से चिट्ठियों को खिसकाने का प्रयास किया तो साँप ने डंडे से चिपककर आसन बदल लिया और लेखक चिट्ठियाँ उठाने में सफल हुआ। लेखक इन सब बातों के लिए पहले से तैयार नहीं था, लेकिन स्थिति के साथ वह अपनी योजना में परिवर्तन करता गया।
इस प्रकार मनुष्य की कल्पना और वास्तविकता में बहुत अंतर होता है। यह बात इस घटना से सिद्ध हो जाती है।
9. 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [CBSE]
ज: लेखक ने अपने बड़े भाई की पिटाई से बचने एवं चिट्ठियाँ डाकखाने में पहुँचाने की जिम्मेदारी के कारण उसने कुएँ में उतरने का निर्णय किया। वह कुएँ में पड़े विषैले साँप से होने वाले भावी खतरों को भी जानता था। इस जोखिमपूर्ण कार्य में उसकी मृत्यु भी हो सकती थी। उसने परिणाम पर कम ध्यान देकर चिट्ठियाँ उठाने में अपना पूरा ध्यान लगाया। उसने अपने उद्देश्य को सामने रखकर कार्य किया, क्योंकि फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर करता है।

3 कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

1. 'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है? [CBSE]

ज: उन' का अर्थ है-एक कम और कोटि का अर्थ है-करोड़। इस प्रकार उनाकोटी का शाब्दिक अर्थ है-एक करोड़ से एक कम। इस नाम के संबंध में एक पौराणिक कथा यह है कि पहले यहाँ कल्लू नामक कुम्हार रहता था। वह पार्वती का भक्त था। एक बार जब शिव और पार्वती आए तो कल्लू भी उनके निवास कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। पार्वती के कहने पर शिव उसे ले जाने को तैयार हो गए परंतु एक रात में एक लाख मूर्तियाँ बनाने की शर्त रख दी। कल्लू ने रात भर परिश्रम से मूर्तियाँ बनाई परंतु वे एक करोड़ से एक कम निकली। इसी बात से शिव कल्लू को वहीं छोड़कर चले गए। तब से इसका नाम उनाकोटी पड़ गया।

2. पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

ज: पहाड़ों को अंदर से काटकर यहाँ विशाल आधार मूर्तियाँ बनी हैं। एक विशाल चट्टान ऋषि भागीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा अवतरण की पौराणिकता को चित्रित करती है। गंगा अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धंसकर पाताल लोक में न चली जाए। शिव को इसके लिए तैयार किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और इसके बाद उसे धीरे-धीरे पृथ्वी पर बहने दें। शिव का चेहरा एक चट्टान पर बना हुआ है और उनकी जटाएँ तो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। भारत में यह शिव की सबसे बड़ी आधार मूर्ति है। पूरे साल बहनेवाला एक जल प्रपात पहाड़ों से उतरता है जिसे गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है।

3. कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ गया?

ज: उनाकोटी में पार्वती भक्त कल्लू नामक कुम्हार रहता था। एक बार शिव पार्वती सहित वहाँ पधारे। कल्लू ने शिव के साथ उनके आवास स्थान कैलाश पर्वत पर जाने की जिद की। तब पार्वती ने शिव से कहा कि उसे साथ ले चलें। इस पर शिव तैयार हो गए परंतु एक शर्त रख दी कि वह रात भर में उनकी एक कोटि मूर्ति तैयार करे। कल्लू ने रातभर मूर्तियाँ तैयार की परंतु वे संख्या में एक कम निकली। शिव को उसे साथ न ले जाने का बहाना मिल गया। वे कल्लू और मूर्तियों को छोड़कर चले गए। इस प्रकार कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी के साथ जुड़ गया।

4. 'मेरी रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई'-लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?

ज: त्रिपुरा के हिंसाग्रस्त मुख्य भाग में प्रवेश करने से पहले अंतिम पड़ाव टीलियामुरा ही है। राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पर अगले 83 किलोमीटर यानी मनु तक की यात्रा के दौरान ट्रैफिक सी०आर०पी०एफ० की सुरक्षा में काफिले की शक्ल में चलता है। मुख्य सचिव और आईजी० सी०आर०पी०एफ० से मैंने निवेदन किया था कि वे हमें घेरेबंदी में लेकर चलनेवाले काफिले के आगे-आगे चलें। काफिला दिन में 11 बजे के आसपास चलना शुरू हुआ। सभी काम में मस्त थे उस समय तक डर की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। पहाड़ियों पर इरादतन रखे दो पत्थरों की तरफ मेरा ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ। दो दिन पहले हमारा एक जवान यहीं विद्रोहियों द्वारा मारा गया था' मेरी रीढ़ में एक झुरझुरी सी दौड़ गई। मनु तक की अपनी शेष यात्रा में, मैं यह ख्याल अपने दिल से निकाल नहीं पाया कि हमें घेरे हुए सी०आर०पी०एफ० के जवान हैं अन्यथा शांतिपूर्ण प्रतीत होनेवाले जंगलों में किसी जगह बंदूकें लिए विद्रोही भी छिपे हो सकते हैं।

5. त्रिपुरा 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण कैसे बना?

ज: त्रिपुरा तीन ओर बाँग्लादेश से तथा एक ओर भारत से घिरा है। यहाँ बाँग्लादेश से पश्चिम बंगाल से लोग घुसपैठ करके आए और यहाँ बस गए। ये लोग विभिन्न धर्मों को मानने वाले थे। त्रिपुरा में विश्व के चार बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व मौजूद है। इस तरह त्रिपुरा बहुधर्मी समाज का उदाहरण बनता गया।

6. टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

ज: टीलियामुरा कुछ ज्यादा बड़ा गाँव है। यहाँ लेखक की मुलाकात हेमंत कुमार जमातिया से हुई, जो यहाँ के एक प्रसिद्ध लोक गायक हैं और जो 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी हो चुके हैं। हेमंत कोकबारोक बोली में गाते हैं। टीलियामुरा शहर के वार्ड नं 3 में लेखक की मुलाकात एक और गायक मंजु ऋषिदास से हुई। ऋषिदास मोचियों के एक समुदाय का नाम है। लेकिन जूते बनाने के अलावा इस समुदाय के कुछ लोगों की । विशेषता थाप वाले वाद्यों जैसे तबला और ढोल के निर्माण और उनकी मरम्मत के काम में भी है।

मंजु ऋषिदास आकर्षण महिला थीं और रेडियो कलाकार होने के अलावा नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व भी करती थीं। वे निरक्षर थीं लेकिन अपने वार्ड की सबसे बड़ी आवश्यकता यानी पेयजल के बारे में उन्हें पूरी जानकारी थी। नगर पंचायत को वे अपने वार्ड में नल का पानी पहुँचाने और इसकी मुख्य गलियों में ईंटें बिछाने के लिए राजी कर चुकी थीं।

7. कैलासशहर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी? [CBSE]

ज: कैलाश नगर के जिलाधिकारी केरल से आए तेज़-तर्रार जवान थे। उन्होंने चाय के दौरान लेखक को टी.पी.एस. (तरू पोटैटो सीड) की खेती की सफलता के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि आलू की परंपरागत खेती में जहाँ दो मीट्रिक टन बीज कल्लू कुम्हार की उनाकोटी की प्रतिहेक्टेयर जरूरत पड़ती है, वहीं टी.पी.एस. की मत्र 100 ग्राम बीज की ज़रूरत होती है। त्रिपुरा से टी.पी.एस. का निर्यात असम, मिजोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के अलावा वियतनाम, बांग्लादेश और मलेशिया को भी किया जा रहा है।

4 मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

1. लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?

ज: लेखक को तीन-तीन हार्ट अटैक आए थे। कुछ डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया था। डॉ. बोर्जेस द्वारा दिए गए 900 वोल्ट्स के शॉक्स के कारण उसका हृदय 60% तक जल गया था। 40% बचे हृदय का आपरेशन करने के बाद यदि रिवाइव नहीं हुआ तो ....। इसलिए सर्जन आपरेशन से हिचक रहे थे।

2. 'किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?

ज: 'किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में पुस्तकों का वह संकलन था जो उसके बचपन से लेकर आज तक संकलित था। जब उन्हें अस्पताल से घर लाया गया तो उन्होंने ज़िद की थी कि वे अपने आपको उनके साथ जुड़ा हुआ अनुभव कर सकें। उनके प्राण इन हज़ारों किताबों में बसे हुए थे। जो पिछले चालीस-पचास बरस में धीरे-धीरे जमा होती गई थीं।

3. लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?

ज: लेखक के घर में नियमित रूप से आर्य मित्र 'साप्ताहिक', 'वेदोदम', 'सरस्वती' 'गृहिणी' तथा दो बाल पत्रिकाएँ खास उसके लिए-'बालसखा' और 'चमचम' आती थीं।

4. लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?

ज: लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक बचपन से था। उसके घर में कई पुस्तकें थीं। वह घर में सत्यार्थ-प्रकाश और दयानंद सरस्वती की जीवनी बड़ी रुचि से पढ़ता था। उनकी रोमांचक घटनाएँ उसे बड़ा प्रभावित करती थीं। वह बाल-सखा और चमचम की कथाएँ पढ़ता था। उसी से उसे किताबें पढ़ने का शौक लगा। पाँचवीं कक्षा में प्रथम आने पर अंग्रेज़ी की दो किताबें इनाम में मिली थीं। इन दो किताबों ने उसके लिए नई दुनिया का द्वार खोल दिया था। पिता जी की प्रेरणा से उसने किताबों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। इससे उसके निजी पुस्तकालय की शुरुआत हो गई।

5. माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चिंतित रहती थी?

ज: लेखक पाठ्यक्रम की पुस्तकों से अधिक 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ता था। इससे ऊबने पर वह बार-बार 'बालसखा' और 'चमचम' पढ़ता था। ऐसे में माँ को लगा कि यह लड़का पास कैसे होगा। ऐसे में वह लेखक की स्कूली पढ़ाई के बारे में चिंतित रहती थी।

6. स्कूल से इनाम में मिली अंग्रेजी की दोनों पुस्तकों ने किस प्रकार लेखक के लिए नई दुनिया के द्वार खोल दिए?

ज: स्कूल से इनाम में मिली अंग्रेज़ी की दोनों पुस्तकों ने लेखक के लिए नई दुनिया के द्वार खोल दिए। एक पुस्तक में पक्षियों के बारे में काफी जानकारी थी। विभिन्न पक्षियों की जातियों, उनकी बोलियों, उनकी आदतों की जानकारी उसमें दी गई थी। दूसरी किताब थी 'टुस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं। जहाज कितने प्रकार के होते हैं कौन-कौन सा माल लादकर लाते हैं, कहाँ से लाते हैं, कहाँ जाते हैं आदि की जानकारी से भरी पड़ी थी। इन दो किताबों से लेखक पक्षियों से भरे आकाश और रहस्यों से भरे समुद्र के बारे में जानकारी प्राप्त किया।

पिता ने अलमारी के एक खाने से अपनी चीजें हटाकर जगह बनाई और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रखकर लेखक से कहा-"आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है।" इस प्रकार लेखक का नया मार्ग प्रशस्त हो गया।

7. 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों को यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है-पिता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मिली?

ज: "आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है।" पिता के इस कथन से लेखक में पुस्तकों का संकलन एवं सहेजकर रखने के प्रति रुचि पैदा कर दी। फिर तो बीतते समय के साथ-साथ किताबें पढ़ने के अलावा किताबें इकट्ठी करने की सनक पैदा हुई, जिससे उसका अपना निजी पुस्तकालय बन सका।

8. लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

अथवा

भारती जी ने देवदास कैसे और किन हालातों में खरीदा?

ज: लेखक के पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि फीस जुटाना तक मुश्किल था। अपने शौक की किताबें खरीदना तो संभव ही नहीं था। एक ट्रस्ट से असहाय छात्रों को पाठ्यपुस्तकें खरीदने के लिए कुछ रुपये सत्र के आरंभ में मिलते थे। उनसे लेखक प्रमुख पाठ्यपुस्तकें सेकेंड-हैंड' खरीदता था। बाकी अपने सहपाठियों से लेकर पढ़ता और नोट्स बना लेता।

एक बार जाने कैसे पाठ्यपुस्तकें खरीदकर भी दो रुपये बच गए थे। उसने देवदास फ़िल्म देखने का निर्णय किया। तभी पुस्तक की दुकान पर शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की पुस्तक 'देवदास' को देखा। उसने वह पुस्तक खरीद ली और बाकी के बचे पैसे खर्च करने की बजाए माँ को लौटा दिए। इस प्रकार लेखक ने अपनी पहली पुस्तक खरीदी।

9. 'इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ'-का आशय स्पष्ट कीजिए।

ज: आशय-लेखक के पास अपने पुस्तकालय में चेखव, मोपाँसा, टालस्टाय जैसे विदेशी लेखकों के साथ कबीर, सूर, तुलसी, रहीम जैसे महापुरुषों की रचनाएँ थीं। लेखक को लगता था कि इन कृतियों के रूप में उसे ये महापुरुष उसके आसपास ही खड़े हैं। इनके बीच वह स्वयं को अकेला नहीं महसूस करता था।